बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्याय नौ

अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण :
अच्छा इरादा होना

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय......1
प्रेरणाओं का महत्व......2
अवधारणा......2
जटिल......2
सामान्य एवं विशिष्ट......3
ज्ञात एवं अज्ञात......3
अनिवार्यता......3
हृदय......4
कपट......5
सद्गुण......6
विश्वास की प्रेरणा......7
उद्धार देने वाला विश्वास......8
आरम्भिक उद्धार का माध्यम......8
सतत् समर्पण......9
मन-फिराव......12
आशा......15
प्रेम की प्रेरणा......17
निष्ठा......18
वफादारी......18
केन्द्रीकरण......20
उत्तरदायित्व......21
कार्य......22
पश्चातापी अनुग्रह......23
सामान्य अनुग्रह......24
अनुराग......26
कृतज्ञता......27
भय......28
उपसंहार......31

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्याय नौ

अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण : अच्छा इरादा होना

परिचय

प्रत्येक अभिभावक जानता है कि बच्चे कई बार वस्तुएँ तोड़ देते हैं। यह कोई बर्तन, खिलौना, या सजावट की कोई वस्तु हो सकती है। परन्तु कभी-कभार, सारे बच्चे कोई छोटा नुकसान करते हैं। अब, अभिभावकों के रूप में, हम कई प्रकार से प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं। यदि बच्चे जान-बूझकर कुछ तोड़ते हैं तो हम क्रोधित हो सकते हैं। यदि बच्चा उस समय लापरवाह या अनाज्ञाकारी है तो भी हम नाराज हो सकते हैं। परन्तु यदि यह वास्तव में यह अचानक हुआ था, तो हो सकता है कि हम बिल्कुल भी नाराज न हों।

हम इन विभिन्न तरीकों से प्रतिक्रिया व्यक्त क्यों करते हैं? हमारे प्रत्युत्तर इसलिए भिन्न होते हैं क्योंकि हम अपने बच्चों के इरादों को देखते हैं। हो सकता है कि हम कोई प्रतिक्रिया न करें, एक नरम सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया करें, या क्रोधित हो जाएँ; यह इस पर निर्भर करता है कि हम उनके इरादों का निर्धारण किस प्रकार करते हैं। और व्यस्कों के लिए भी नैतिक निर्णयों का सच कुछ ऐसा ही है। नैतिक शिक्षा को कभी भी हमारे इरादों से अलग नहीं करना चाहिए। हमारे द्वारा लिए जाने वाले प्रत्येक नैतिक निर्णय में हमारी प्रेरणाएँ, इच्छाएँ, और इरादे वे महत्वपूर्ण अवयव हैं जिन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए।

यह हमारी श्रंखला बाइबल पर आधारित निर्णय लेना का नौवाँ अध्याय है। और हमने इस अध्याय का शीर्षक "अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोणः अच्छे इरादे होना" रखा है। इस अध्याय में, हम यह देखने के द्वारा नैतिक शिक्षा के अस्तित्व सम्बन्धी दृष्टिकोण को जांचेंगे कि किस प्रकार हमारी प्रेरणाएं और इरादे हमारे निर्णयों की नैतिकता को प्रभावित करते हैं।

जैसे कि आपको याद होगा, बाइबल संबंधी निर्णय लेने के लिए हमारा आयाम यह रहा है कि नैतिक निर्णय लेने में एक व्यक्ति द्वारा किसी परिस्थिति में परमेश्वर के वचन को लागू करना शामिल होता है। जब हम परमेश्वर के वचन के मानकों के प्रकाश में हमारे चुनावों को देखते हैं तो हम निर्देशात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग कर रहे हैं। जब हम परिस्थितियों पर ध्यान देते हैं तो हम परिस्थिति-संबंधी दृष्टिकोण का प्रयोग कर रहे हैं। और जब हम नैतिक प्रश्नों में शामिल व्यक्तियों पर विचार करते हैं तो हम अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण का प्रयोग कर रहे हैं। इस अध्याय में हम अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण की हमारी जांच को जारी रखेंगे।

हमारे पिछले अध्याय में हमने इस जांच के द्वारा अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण का परिचय दिया था कि एक अच्छा नैतिक चुनाव करने के लिए किस प्रकार के लोगों या व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। विशेषतः, इसके लिए अच्छे लोगों की आवश्यकता होती है, इस अर्थ में अच्छे कि उन्हें यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से छुटकारा मिला है।

इस अध्याय में, हम अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण के एक और पहलू पर ध्यान देंगेः हमारी नैतिक प्रेरणाएं। जैसा कि हम देखेंगे, परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए आवश्यक है कि अच्छे लोग सही कारण से सही कार्य करें; उनकी प्रेरणाएँ धार्मिक होनी चाहिए।

अच्छे इरादों पर हमारा अध्याय तीन मुख्य भागों में विभाजित होगा। पहला, हम प्रेरणाओं के महत्व पर चर्चा करते हुए इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देंगे, जैसे प्रेरणा क्या है और प्रेरणाओं का एक अच्छे व्यवहार से क्या संबंध है? दूसरा, हम बाइबल संबंधी नैतिक शिक्षा के निर्णायक पहलू के रूप में विश्वास की प्रेरणा के बारे में बात करेंगे। और तीसरा, हम प्रेम की प्रेरणा पर ध्यान देंगे जिसके बारे में बाइबल हमें प्रोत्साहित करती है। आइए हम नैतिक शिक्षा में प्रेरणाओं के महत्व से आरम्भ करें।

प्रेरणाओं का महत्व

हम पहले प्रेरणा की अवधारणा पर विचार करने और फिर उचित प्रेरणाओं की अनिवार्यता के बारे में बात करने के द्वारा प्रेरणाओं के महत्व पर चर्चा करेंगे।

अवधारणा

हम प्रेरणाओं के बारे में सामान्यतः दो मूलभूत तरीकों से बात करते हैं। एक ओर, प्रेरणा वह उद्देश्य हो सकती है जिसके लिए हम कुछ करते हैं- जिसे हम पूरा करने की आशा रखते हैं। और दूसरी ओर, प्रेरणा किसी कार्य का कारण भी हो सकती है।

पहले अर्थ में, प्रेरणाएं मूलतः लक्ष्यों के समान ही होती हैं, जिसके बारे में हम परिस्थिति-संबंधी दृष्टिकोण पर पिछले अध्यायों में देख चुके हैं। अतः, इस अध्याय में हम कार्यों के कारणों के रूप में प्रेरणाओं पर ध्यान देंगे।

कारण और प्रभाव की अवधारणा सामान्य अनुभव में सुपरिचित है। उदाहरण के लिए, जब एक व्यक्ति गेंद को पैर से ठोकर मारता है तो हम कहते हैं कि वह ठोकर गेंद के हिलने का कारण है। और गेंद की गतिविधि ठोकर का प्रभाव या परिणाम है। हम अन्य बहुत से उदाहरणों के बारे में भी सोच सकते हैं। वर्षा के कारण मैदान भीगता है। आँख बन्द करने के कारण हमें दिखाई नहीं देता। दिनभर कठिन मेहनत करने के कारण हम थक जाते हैं।

मानवीय प्रेरणाओं और कार्यों के बारे में भी यही बात लागू होती है। प्रेरणाएं कारणों के रूप में कार्य करती हैं और हमारे कार्य उनके द्वारा उत्पन्न किए गए प्रभाव होते हैं। इस भाव में, प्रेरणा एक आन्तरिक प्रवृत्ति है जो हम से कुछ करवाती है। आन्तरिक प्रवृत्तियाँ ये बातें हैं जैसे चारित्रिक गुण, इच्छाएँ, भावनाएँ, प्रतिबद्धताएँ या हमारे अन्दर की कोई भी ऐसी बात जो हम से कोई कार्य करवाती है।

प्रेरणाओं के इस आधारभूत विचार को ध्यान में रखते हुए, हमें तीन संक्षिप्त टिप्पणियाँ करने की आवश्यकता है।

जटिल

पहला, प्रेरणाएं सामान्यतः जटिल होती हैं। सामान्य परिस्थितियों में, बहुत सारे चारित्रिक गुण, इच्छाएँ, भावनाएँ और प्रतिबद्धताएँ एक साथ मिलकर हमें नैतिक निर्णय लेने की ओर अगुवाई करते हैं।

उदाहरण के लिए, एक पिता के बारे में सोचें जो अपने परिवार की जीविका के लिए नौकरी पर जाता है। वह अपनी पत्नी और बच्चों से प्रेम करता है, वह उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है, और वह स्वयं के लिए भी भोजन, वस्त्र एवं आवास की इच्छा रखता है। उसी समय, उसके मन में विरोधाभासी इच्छाएँ हो सकती हैं, जैसे कि घर पर रहने और आराम करने की इच्छा, या अपने घर का काम करने की इच्छा, या छुट्टी पर जाने की इच्छा। ये सारी आन्तरिक प्रवृत्तियाँ विविध स्तरों के तनाव और सामंजस्य में उसके अन्दर रहती हैं। परन्तु अन्त में, अधिकाँश दिनों में इन प्रेरणाओं के सामूहिक प्रभाव के कारण वह नौकरी पर जाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सामान्य एवं विशिष्ट

दूसरा, कुछ प्रेरणाएं बहुत सामान्य होती हैं और कुछ बहुत ही विशिष्ट। और बहुत सारी प्रेरणाएं इन दोनों चरम सीमाओं के बीच में कहीं विद्यमान होती हैं।

उदाहरण के लिए, खोए हुओं के साथ सुसमाचार बाँटने की हमारी मसीही इच्छा एक सामान्य प्रेरणा है। हम अपनी इस इच्छा से प्रेरित होते हैं कि लोग यीशु पर विश्वास करें और सम्पूर्ण संसार उसके राज्य में आए। परन्तु कई बार हम किसी व्यक्ति विशेष से किसी विशिष्ट तरीके से सुसमाचार को बाँटने के लिए प्रेरित होते हैं, जिससे हम मिल चुके हैं। और कई अन्य अवसरों पर हमारी प्रेरणाएं इन दोनों चरम सीमाओं के बीच में होती हैं; हम अविश्वासियों की खोज में बाहर जा सकते हैं जिनके साथ हम सुसमाचार को बाँट सकें।

ज्ञात एवं अज्ञात

तीसरा, जटिल एवं अधिकांशतः सामान्य और विशिष्ट होने के अतिरिक्त, हमारी प्रेरणाएं हमारे लिए ज्ञात एवं अज्ञात भी हो सकती हैं। हम अपनी कुछ प्रेरणाओं को अच्छी तरह जान सकते हैं, लेकिन हम कभी भी हमारी सारी प्रेरणाओं से अवगत नहीं हो सकते।

उदाहरण के लिए, यदि एक व्यक्ति भोजन करता है तो हम कह सकते हैं कि उसकी प्रेरणा भूख है। भूख एक आन्तरिक भावना और अवस्था है और भूखा व्यक्ति सामान्यतः अपनी भूख से अवगत होता है।

परन्तु मनोविज्ञान एवं सामान्य अनुभव ने हमें सिखाया है कि कई बार लोग इसलिए खाते हैं क्योंकि वे अप्रसन्न हैं और सांत्वना पाना चाहते हैं। ऐसे उदाहरणों में, खाने वाले लोग अक्सर इस बात से अनजान होते हैं कि इसके पीछे उनकी प्रेरणा सांत्वना पाना, अप्रसन्नता की भावना को दूर करना है।

प्रेरणाओं की मूलभूत अवधारणा और कुछ जटिलताओं पर चर्चा करने के बाद, हम सही प्रेरणा की अनिवार्यता की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं। नैतिक शिक्षा में प्रेरणाएं इतनी महत्वपूर्ण क्यों होती हैं?

अनिवार्यता

दुर्भाग्यवश, मसीही अक्सर यह मान बैठते हैं कि नैतिक होने का अर्थ केवल परमेश्वर की इच्छा के प्रति बाहरी रूप से आज्ञाकारी होना है। हम यह सोचने की गलती कर बैठते हैं कि परमेश्वर हम से सही प्रेरणाओं और इच्छाओं को रखने की माँग नहीं करता है। कई बार इसका कारण यह होता है कि व्यवहारों की पहचान करना और उन्हें सुधारना कहीं अधिक आसान होता है। कई बार इसका कारण यह भी होता है कि हमारे पासबान और उपदेशक निरन्तर हमारे ध्यान को आन्तरिक इच्छाओं और प्रतिबद्धताओं की अपेक्षा व्यवहारों की ओर खींचते हैं। और इसके अन्य कारण भी हैं। फिर भी, बाइबल इसे स्पष्ट करती है कि यदि हमें वास्तव में नैतिक बनना है तो परमेश्वर को सम्मान देने वाले हमारे व्यवहारों की जड़ें परमेश्वर को सम्मान देने वाली प्रेरणाओं में होनी आवश्यक हैं।

हम तीन तरीकों से सही प्रेरणा की अनिवार्यता की जांच करेंगे। पहला, हम बाइबल की इस माँग को देखेंगे कि अच्छे कार्य हृदय से निकलते हैं। दूसरा, हम बाइबल द्वारा पाखण्ड की निंदा पर विचार करेंगे। और तीसरा, हम इस तथ्य को बताएँगे कि मसीही सद्‌गुण नैतिक रूप से अच्छी प्रेरणाओं का स्रोत है। आइए हम इस विचार से आरम्भ करें कि अच्छे कार्यों को दिल से किया जाना चाहिए।

हृदय

पवित्रशास्त्र मानवीय हृदय के बारे में विभिन्न तरीकों से बात करता है। परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए, हम हमारे आन्तरिक व्यक्ति की गहराई और हमारी प्रेरणाओं के केन्द्र के रूप में हृदय के विवरण पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। या इस अध्याय में पहले प्रयोग की गई शब्दावली के अनुसार, हम हमारी सारी आन्तरिक प्रवृत्तियों के योग के रूप में हृदय पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। इस अर्थ में हृदय, मन, विचारों, आत्मा और प्राण की बाइबल की धारणाएँ एक दुसरे से जुडी हुई हैं।

1 इतिहास 28:9 को देखें, जहाँ दाऊद ने प्रेरणाओं और हृदय के बीच घनिष्ट संबंध को दिखाया हैः

> हे मेरे पुत्र सुलैमान, तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान रख और खरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा करता रह; क्योंकि यहोवा मन को जाँचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। (1 इतिहास 28:9)

इस परिच्छेद में, दाऊद ने अपने पुत्र को सिखाया कि परमेश्वर के प्रति आज्ञापालन हमारे आन्तरिक व्यक्ति की गहराई से निकलना चाहिए। इसमें पूर्ण दिल से भक्ति और एक इच्छुक मन शामिल है। परमेश्वर केवल हमारे बाहरी आज्ञापालन में ही रूचि नहीं रखता है। उसकी माँग है कि विचारों के पीछे का प्रत्येक मन और प्रत्येक प्रेरणा पूरी तरह से उसके प्रति समर्पित हों। वह सच्चे आज्ञापालन की माँग करता है जो हमारे गहनतम विचारों और इच्छाओं से प्रवाहित होता है।

पवित्रशास्त्र में बहुत से परिच्छेद सिखाते हैं कि आज्ञापालन अच्छी प्रेरणाओं से प्रवाहित होना चाहिए, जैसे कि व्यवस्थाविवरण 6:5-6 और 30:2-17; यहोशू 22:5; 1 राजा 8:61; भजन 119:34; मत्ती 12:34-35; रोमियों 6:17-18; एवं इफिसियों 6:5-6 आदि। उदाहरण के लिए, आइए हम पुराने नियम से एक और नये नियम से एक परिच्छेद को देखें।

पहले, व्यवस्थाविवरण 6:5-6 के वचनों को सुनें:

> तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। और ये आज्ञाएँ … तेरे मन में बनी रहें। (व्यवस्थाविवरण 6:5-6)

जैसा हम इस परिच्छेद में देखते हैं, पुराने नियम में परमेश्वर की अपने लोगों से यह माँग थी कि वे अपने मन से परमेश्वर से प्रेम करें। उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था को अपने हृदयों पर लिखना था ताकि वे अपने मन से परमेश्वर की आज्ञा मानें।

और नये नियम में भी यही सच है। उदाहरण के लिए, रोमियों 6:17-18 के इन वचनों को सुनें:

> परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के साँचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए। (रोमियों 6:17-18)

"पूरे मन से" के रूप में अनुवादित यूनानी शब्द एक कार्डियास है। अक्षरशः, इसका अनुवाद "मन से" के रूप में किया जा सकता है। जैसे पौलुस ने यहाँ सिखाया, परमेश्वर पूर्ण मन से आज्ञाकारिता की माँग करता है- आज्ञाकारिता जो दिल से प्रवाहित होती है।

यह देखने के बाद कि अच्छी प्रेरणाएँ इसलिए अनिवार्य हैं क्योंकि अच्छे कार्य दिल से किए जाने चाहिए, अब हमें नैतिक निर्णयों को लेते समय अच्छी प्रेरणाओं की अनिवार्यता के दूसरे कारण की ओर मुड़ना चाहिएः कपट के विषय पर पवित्रशास्त्र की शिक्षा।

कपट

कपट पवित्रशास्त्र में बहुत से रूपों में आता है, परन्तु यहाँ हम विशेषतः नैतिकता के झूठे दिखावे के रूप में कपट की बात कर रहे हैं। जब हमारा बाहरी व्यवहार परमेश्वर के वचन के अनुरूप प्रतीत होता है परन्तु हमारी प्रेरणाएँ नहीं, तो हम कपटी व्यवहार कर रहे हैं और हमारे कार्यों से परमेश्वर प्रसन्न नहीं होता है।

मत्ती 6:2-16 में यीशु की शिक्षाओं को सुनें:

> इसलिए जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी, सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उन की बड़ाई करें... और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिए सभाओं में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन को अच्छा लगता है... जब तुम उपवास करो, तो कपटियों की नाईं तुम्हारे मुँह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुँह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें। (मत्ती 6:2-16)

दान देना, प्रार्थना करना और उपवास करना अपने आप में अच्छे और धार्मिक व्यवहार थे। परन्तु इन्हीं मामलों में, यीशु ने उन्हें कपटियों के रूप में दोषी ठहराया क्योंकि वे परमेश्वर एवं पड़ोसी के प्रति प्रेम की बजाय घमण्ड से प्रेरित थे। बुरी प्रेरणाओं को इस प्रकार दोषी ठहराने के द्वारा, कपट के विरूद्ध बाइबल की शिक्षा यह संकेत देती है कि अच्छे व्यवहार हमेशा अच्छी प्रेरणाओं से प्रवाहित होने चाहिए।

अब, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम कपट को केवल ढोंगी अविश्वासियों तक ही सीमित न करें; मसीहियों में भी ऐसी प्रेरणाएं हो सकती हैं जो उनके बाहरी व्यवहारों से मेल नहीं खाती हैं। संभवतः पवित्रशास्त्र में इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण गलातिया में कुछ यहूदी मसीहियों द्वारा अन्यजाति मसीहियों से व्यवहार करने का तरीका था। इन यहूदी मसीहियों ने पारम्परिक यहूदी रिवाजों का पालन करना यह जानकर बन्द कर दिया था कि मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान उन से पुराने नियम के सिद्धान्तों को नए तरीकों से लागू करने की माँग करते हैं। फिर भी, वे कुछ अप्रचलित परम्पराओं को मानते थे और कलीसिया में अन्यजातियों से अधिक उन्हें सम्मान देते थे।

आश्चर्यजनक रूप से, प्रेरित पतरस और मिशनरी बरनबास भी इन मसीही कपटियों में शामिल थे। यह तब और अधिक आघात पहुँचाने वाला हो जाता है जब हम यह विचार करते हैं कि पतरस सुसमाचार को सबसे पहले अन्यजातियों की ओर लाया था (जैसा हम प्रेरितों के काम अध्याय 10 में पढ़ते हैं), और बरनबास अन्यजाति संसार के पहले मिशनरियों में से एक था (जैसा हम प्रेरितों के काम अध्याय 13 में पढ़ते हैं।) गलातियों 2:11-13 में इस समस्या के बारे में पौलुस के अभिलेख को देखें:

> पर जब कैफा अन्ताकिया में आया तो मैं ने उसके मुँह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था। इसलिए कि याकूब की ओर से कितने लोगों के आने से पहले वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था, परन्तु जब वे आए, तो खतना किए हुए लोगों के डर के मारे उन से हट गया और किनारा करने लगा। और उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया, यहाँ तक कि बरनबास भी उन के कपट में पड़ गया। (गलातियों 2:11-13)

इस कपट के जवाब में, पौलुस ने पतरस को यह दिखाते हुए उसके मुँह पर झिड़का कि पतरस स्वयं एक अन्यजाति की तरह जी रहा था न कि एक यहूदी की तरह। पतरस जानता था कि मसीह में अन्यजाति यहूदियों के बराबर थे। परन्तु अपने सम्मान के नष्ट हो जाने के भय से, वह इस तरह से व्यवहार करने के लिए तैयार था जिससे ऐसा लगे कि अन्यजाति मसीही यहूदी मसीहियों से हीन थे। पतरस के कार्य कपटी थे क्योंकि वह परमेश्वर और उसकी कलीसिया का सम्मान करने की भली इच्छा की बजाय अपनी स्वयं की साख को बचाने की स्वार्थी इच्छा से प्रेरित था।

अब जबकि हम यह देख चुके हैं कि अच्छे कार्य दिल से किए जाने चाहिए और निष्कपट होने चाहिए, तो हम अच्छी प्रेरणाओं की अनिवार्यता के तीसरे कारण को देखने के लिए तैयार हैं: सद्‌गुण जो मसीह के अनुयायियों की विशेषता होनी चाहिए।

सद्‌गुण

सरल शब्दों में, सद्‌गुण एक प्रशंसनीय नैतिक चरित्र है। हम एक प्रशंसनीय नैतिक चरित्र के विभिन्न पहलुओं को बताते हुए सद्‌गुण के बारे में बहुवचन में भी बात कर सकते हैं। प्रेरणाओं की हमारी चर्चा के लिए सद्‌गुण महत्वपूर्ण है क्योंकि सद्‌गुणी चरित्र अपने आप को अच्छी प्रेरणाओं के रूप में अभिव्यक्त करता है। पवित्रशास्त्र में ऐसी कई सूचियाँ हैं जिन्हें हम सद्‌गुण कह सकते हैं, परन्तु संभवतः सर्वाधिक परिचित आत्मा के फल की पौलुस की सूची है।

गलातियों 5:22-23 में, पौलुस आत्मा के फल का वर्णन इस प्रकार करता हैः

> आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है। (गलातियों 5:22-23)

यह सूची पूर्ण नहीं है परन्तु यह उन नैतिक गुणों का एक अच्छा साराँश है जिन्हें परमेश्वर अपने लोगों में चाहता है। इनमें से प्रत्येक सद्‌गुण एक आन्तरिक प्रवृत्ति होनी चाहिए जो हम से नैतिक कार्य करवाती है। और इस अर्थ में सद्‌गुण प्रेरणाएं हैं।

उदाहरण के लिए, मसीही प्रेम के सद्‌गुण से हमें प्रेमपूर्ण तरीकों से कार्य करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। इसी प्रकार, जो लोग आत्मा में आनन्दित हैं उन्हें अपने आनन्द से प्रेरणा मिलेगी। शान्तिपूर्ण लोग अपने अन्दर की शान्ति से प्रेरित होंगे। धैर्यवान लोग अपने धैर्य से प्रेरित होंगे। जैसे यीशु ने मत्ती 12:35 में सिखायाः

> भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है। (मत्ती 12:35)

इस अध्याय के शेष भाग के लिए, हम प्रेम और विश्वास के सद्‌गुणों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है कि अच्छे कार्यों के लिए वे आवश्यक हैं। इसकी तैयारी में, आइए हम इस विचार को देखें कि जब प्रेम और विश्वास के सद्‌गुण हमारे अन्दर नहीं हैं और जब तक ये सद्‌गुण हमारे व्यवहार को प्रेरित नहीं करते हैं, तब तक हम जो कुछ करते हैं उसे अच्छा नहीं माना जा सकता है। पहले इसके बारे में सोचें कि पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को प्रेम के बारे में किस प्रकार बताया। 1 कुरिन्थियों 13:1-3 में उसने इन वचनों को लिखाः

> यदि मैं मनुष्यों, और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झनझनाती हुई झाँझ हूँ। और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ, और

> सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिए दे दूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। **(1 कुरिन्थियों 13:1-3)**

यह परिच्छेद स्पष्ट संकेत देता है कि हमारे कार्य हमारे दिलों के प्रेम से प्रवाहित होने चाहिए। अर्थात्, यदि हमारे कार्य हमारे दिलों के प्रेम से प्रवाहित नहीं होते हैं तो परमेश्वर उन्हें अच्छा नहीं मानता है।

इसी प्रकार, इब्रानियों 11:6 हमें सिखाता है कि विश्वास के गुण को एक प्रेरणा के रूप में कार्य करना चाहिए। उसके वचनों को सुनें:

> विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। **(इब्रानियों 11:6)**

इस परिच्छेद के अनुसार, विश्वास के गुण से हमें विश्वासयोग्य तरीकों से कार्य करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। केवल तभी परमेश्वर हमारे व्यवहार से प्रसन्न होगा।

पवित्रशास्त्र मसीही गुण पर बल देता है क्योंकि प्रेरणाएं नैतिक जीवन के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। और पवित्रशास्त्र द्वारा सिखाया गया प्रत्येक गुण हमारे अन्दर एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है। अतः, जब भी पवित्रशास्त्र मसीही गुणों के महत्व पर बल देता है तो यह अच्छी, सद्गुणी प्रेरणाओं के महत्व पर भी बल देता है।

अब जबकि हम नैतिक निर्णयों में सही प्रेरणाओं के महत्व को देख चुके हैं, तो हम विश्वास की प्रेरणा का विस्तार से अनुसंधान करने के लिए तैयार हैं। हमारे लिए विश्वास के द्वारा प्रेरित होना निर्णायक क्यों है? और विश्वास हमें किस प्रकार प्रेरित करता है?

विश्वास की प्रेरणा

बाइबल की जानकारी रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह अहसास है कि विश्वास पुराने और नये दोनों नियमों का मुख्य विचार है। और विश्वास के विषय का पारम्परिक मसीही धर्मविज्ञान में भी केन्द्रीय स्थान रहा है। इस अध्याय में हमारा विशेष ध्यान नैतिक शिक्षा में केन्द्रीय प्रेरणा के रूप में विश्वास को देखना है। हम यह जांच करना चाहते हैं कि विश्वास हमें परमेश्वर का वचन मानने के लिए किस प्रकार प्रेरित करता है।

पवित्रशास्त्र विश्वास के बारे में इतना अधिक बताता है कि हमारे लिए विश्वास के एक प्रेरणा के रूप में कार्य करने के प्रत्येक तरीके का वर्णन करना असंभव होगा। अतः, हम हमारी चर्चा को हमारी निर्णय लेने की प्रक्रिया में विश्वास के एक प्रेरणा के रूप में कार्य करने के अधिक सामान्य एवं मूलभूत तरीकों तक सीमित रखेंगे। पहले, हम बात करेंगे कि उद्धार देने वाला विश्वास किस प्रकार एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है। दूसरा, हम विश्वास की प्राथमिक अभिव्यक्ति के रूप में मन-फिराव की प्रेरणा पर चर्चा करेंगे। और तीसरा, हम भविष्य की ओर निर्देशित विश्वास के रूप में आशा के बारे में बात करेंगे। आइए, हम उद्धार देने वाले विश्वास की प्रेरणा के साथ आरम्भ करते हैं, वह विश्वास जो अनन्त उद्धार लाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उद्धार देने वाला विश्वास

इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए, हम उद्धार देने वाले विश्वास को संक्षेप में इस प्रकार बता सकते हैं:

> सुसमाचार के सत्य से सहमति और हमारे पाप से बचाने के लिए मसीह पर भरोसा।

निःसन्देह, उद्धार देने वाले विश्वास के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। परन्तु यह परिभाषा इस बात को देखने में हमारी सहायता करेगी कि विश्वास किस प्रकार अच्छे कार्यों के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है।

पवित्रशास्त्र उद्धार देने वाले विश्वास के बारे में दो मुख्य तरीकों से बताता है। एक ओर, यह उद्धार के आरम्भिक माध्यम के रूप में विश्वास की बात करता है। दूसरी ओर, यह उसी उद्धार देने वाले विश्वास को हमारे पूरे मसीही जीवनों में सतत् समर्पण के रूप में बताता है। आइए पहले हम विश्वास को उद्धार के आरम्भिक माध्यम के रूप में देखते हैं।

आरम्भिक उद्धार का माध्यम

जब हम कहते हैं कि उद्धार देने वाला विश्वास आरम्भिक उद्धार का माध्यम है तो इससे हमारा मतलब यह है कि उद्धार को हम पर लागू करने के लिए परमेश्वर इस औजार का प्रयोग करता है। हम विश्वास की तुलना एक कूंची (पेंट ब्रश) से कर सकते हैं जिसके द्वारा कारीगर एक भवन पर रंग करता है। कूंची घर को सफेदी के योग्य नहीं बनाती है, उसी प्रकार विश्वास हमें उद्धार पाने के योग्य नहीं बनाता है। कूंची केवल एक औजार है जिसका प्रयोग कारीगर बाल्टी में से रंग को निकालकर घर की दीवारों पर लगाने के लिए करता है। इसी प्रकार, विश्वास वह औजार है जिसके प्रयोग से परमेश्वर उद्धार को पापी व्यक्तियों पर लागू करता है। हमारे विश्वास में ऐसा कुछ नहीं है जो उद्धार के योग्य हो या जो उद्धार को अर्जित करता हो। इसके विपरीत, मसीह के जीवन और मृत्यु ने उद्धार कमाया है और मसीह विश्वास के द्वारा हमें मुफ्त में उद्धार देता है।

रोमियों 5:1-2 में पौलुस के वचनों को सुनें:

> सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल है, जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुँच भी हुई। **(रोमियों 5:1-2)**

पौलुस यहाँ जिस धर्मी ठहराए जाने की बात कर रहा है, जिसमें परमेश्वर हमारे पाप को क्षमा करता है और हमें धर्मी ठहराता है, वह पौलुस और उसके पाठकों के लिए उस समय हुआ जब वे पहली बार उद्धार देने वाले विश्वास की ओर आए थे।

इस प्रकार का धर्मी ठहराया जाना हमारे उद्धार के आरम्भिक चरण में होता है। यह परमेश्वर का अनुग्रहकारी कार्य है जिसके द्वारा वह हमारे पाप को क्षमा करता है और मसीह की योग्यता को हमारे खाते में जमा करता है। और यह हमेशा के लिए हमारे स्तर को बदल देता है। धर्मी ठहराए जाने से पहले हम पापी और परमेश्वर के शत्रु हैं। परन्तु जैसे ही हम उसके द्वारा बचाए जाते हैं, हम उसके प्रिय संत बन जाते हैं। और हमें धर्मी ठहराने के लिए परमेश्वर जिस औजार का प्रयोग करता है वह है, उद्धार देने वाला विश्वास।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

हमारे आरम्भिक उद्धार के संदर्भ में, उद्धार देने वाला विश्वास हमें हमारे पाप से मन फिराने और हमारे उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा रखने की प्रेरणा देता है। ये अच्छे कार्य हमारे उद्धार के पहले प्रमाण हैं क्योंकि उन्हें केवल सच्चे उद्धार देने वाले विश्वास के द्वारा ही प्रेरित किया जा सकता है।

उद्धार देने वाले विश्वास को हमारे आरम्भिक उद्धार के माध्यम के रूप में बताने के अतिरिक्त, बाइबल उद्धार देने वाले विश्वास को मसीह के प्रति हमारे सतत् समर्पण के रूप में भी बताती है।

सतत् समर्पण

सतत् समर्पण के रूप में, उद्धार देने वाले विश्वास में सुसमाचार के सत्य के प्रति निरन्तर सहमति और हमें हमारे पाप से बचाने के लिए निरन्तर मसीह पर भरोसा शामिल है। यह निरन्तर उसी विश्वास को बनाए रखना है जो हमारे आरम्भिक उद्धार का माध्यम था। और इस प्रकार की सहमति एवं भरोसा निश्चित रूप से हमारे विश्वास को प्रभावित करता है। वे हमारे बारे में, हमारे परिवार, हमारी नौकरियों, हमारे समाजों, और हमारे जीवन की अन्य सारी बातों के प्रति हमारी सोच को बदल देते हैं। इस अर्थ में, उद्धार देने वाला विश्वास एक पूर्ण दृष्टिकोण है जो हमारे हृदयों में स्थिर रहता है और हमारे सारे निर्णयों को प्रभावित करता है। यह एक सक्रिय विश्वास है जो हमारे अच्छे कार्यों का आधार और उनकी प्रेरणा है।

अब, हमें सावधान रहना चाहिए और यह नहीं सोचना चाहिए कि विश्वास केवल एक मानसिक कार्य है। यह केवल इस बात की एक स्वीकृति नहीं है कि यीशु प्रभु है और उसके सुसमाचार के द्वारा हमने उद्धार पाया है। जैसे याकूब 2:19 संकेत देता है, दुष्टात्माएँ भी परमेश्वर की सच्चाईयों को मानसिक रूप से स्वीकार करती हैं परन्तु इससे उन्हें उद्धार नहीं मिलता है।

इसकी अपेक्षा, उद्धार देने वाले विश्वास में हमारे हृदय भी शामिल हैं। यह एक आन्तरिक प्रवृत्ति है जिसके कारण हम इस प्रकार से सोचते, बोलते और कार्य करते हैं जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो। इसलिए, हाँ, उद्धार देने वाले विश्वास में मानसिक कार्य शामिल हैं। परन्तु जब हमारा विश्वास सच्चा होता है तो वे मानसिक कार्य हमारे हृदयों से प्रवाहित होते हैं। इस प्रकार, उद्धार देने वाला विश्वास प्रत्येक विश्वासी के जीवन में एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है, हमें अच्छे कार्यों को करने में समर्थ बनाता और मजबूर भी करता है। उदाहरण के लिए, सुनें उत्पत्ति 15:6 अब्राहम के विश्वास के बारे में क्या कहता हैः

> अब्राम ने यहोवा पर विश्वास किया और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना। (उत्पत्ति 15:6)

यह वचन उस समय अब्राहम के विश्वास के बारे में बताता है जब परमेश्वर ने पहली बार उसके साथ वाचा बाँधी थी और पारम्परिक रूप से इसका प्रयोग उद्धार देने या धर्मी ठहराए जाने वाले विश्वास की परिभाषा देने के लिए किया जाता है। यह इस बात को समझने में हमारी सहायता करता है कि "विश्वास करना" का इब्रानी शब्द उसी मूल शब्द से है जिससे "विश्वास" का इब्रानी संज्ञा शब्द है। यह इस बात को याद रखने में भी सहायता करता है कि धर्मी ठहराए जाने का अर्थ धर्मी होने की घोषणा करना है। अतः, यह वचन हमें सिखाता है कि अब्राहम का उद्धार पाना या धर्मी ठहराया जाना, उसके विश्वास के द्वारा था।

इसी कारण प्रेरित पौलुस विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के सिद्धान्त को साबित करने के लिए उत्पत्ति 15:6 का उल्लेख करता है। उसने रोमियों अध्याय 4 और गलातियों अध्याय 3, दोनों में ऐसा किया है। और हर बार अब्राहम के उदाहरण पर आधारित विस्तृत विवरण देते हुए वह समझाता है कि विश्वास के द्वारा उद्धार पाने का अब्राहम का नमूना मसीह में प्रत्येक विश्वासी के लिए है। और पौलुस के नेतृत्व में, प्रोटेस्टेन्ट धर्मविज्ञानी अक्सर यह साबित करने के लिए अब्राहम का उल्लेख करते हैं कि धर्मी ठहराए जाने के लिए केवल

विश्वास पर्याप्त है। और यह तर्क पूर्णतः सत्य एवं सटीक है परन्तु हम इसे एक और कदम आगे ले जा सकते हैं।

तथ्य यह है कि उत्पत्ति अध्याय 15 में परमेश्वर द्वारा अब्राहम के साथ वाचा बाँधने से बहुत पहले उसके पास केवल उद्धार देने वाला विश्वास ही था। इब्रानियों 11:8 और उत्पत्ति 12:4 के अनुसार, उत्पत्ति अध्याय 15 में बताए गए धर्मी ठहराए जाने से बहुत पहले अब्राहम ने विश्वास में कार्य किया, जब प्रतिज्ञा के देश में जाने के लिए वह हारान से निकला था।

उत्पत्ति अध्याय 15 में बताया गया वाचा का समारोह उसके विश्वास में आने के बहुत से वर्षों के बाद उस समय होता है जब अब्राहम प्रतिज्ञा के देश में पहुँच गया था। निश्चित रूप से, इस पल अब्राहम का विश्वास उद्धार देने वाला, धर्मी ठहराने वाला विश्वास था। परन्तु यह नया विश्वास नहीं था। यह वही विश्वास था जो एक विश्वासी के रूप में अब्राहम के पूरे जीवन की विशेषता रही थी। अतः, जब पौलुस ने हमारे लिए एक नमूना उपलब्ध करवाने के लिए इस घटना का प्रयोग किया तो वह केवल इस तथ्य का उल्लेख नहीं कर रहा था कि हमारा आरम्भिक उद्धार विश्वास के माध्यम से होता है। वह यह भी कह रहा था कि प्रत्येक विश्वासी के लिए आवश्यक है कि वह अब्राहम के समान अपने उद्धार देने वाले विश्वास को बनाए रखे। जैसे पौलुस ने गलातियों 2:20 में लिखा हैः

> मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। **(गलातियों 2:20)**

और इब्रानियों 10:38-39 को सुनें जहाँ लेखक ने पुराने नियम को उद्धृत किया है और उसे आरम्भिक कलीसिया से जोड़ा हैः

> "और मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा, और यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा मन उस से प्रसन्न न होगा।" पर हम हटने वाले नहीं, कि नाश हो जाएँ पर विश्वास करने वाले हैं, कि उद्धार पाएँ। **(इब्रानियों 10:38-39)**

विश्वास करनेवाले और उद्धार पाने वाले-अर्थात्, जिनमें उद्धार देने वाला विश्वास है-वे पीछे नहीं हटते और नाश नहीं होते। वे विश्वास में स्थिर रहते हैं।

उद्धार देनेवाला सच्चा विश्वास हमारे जीवनों की विशेषता है। अतः, यदि हमारा विश्वास हमारे अन्दर नहीं रहता है तो वह कभी भी उद्धार देने वाला सच्चा विश्वास नहीं था। इसके अतिरिक्त, उद्धार देने वाला सच्चा विश्वास हमें अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देता है। अतः, यदि हम अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं होते हैं तो हमारा विश्वास नकली है; वह एक झूठा विश्वास है जो हमें उद्धार नहीं दे सकता है। जैसे याकूब ने याकूब 2:17-18 में लिखा हैः

> वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है... मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊँगा। **(याकूब 2:17-18)**

हमारे सम्पूर्ण मसीही जीवनों में उद्धार देने वाला विश्वास अपने आप को अच्छे कार्यों में प्रकट करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इब्रानियों अध्याय 11 पर विचार करें, जिसे कई बार “विश्वास का समुदाय” कहा जाता है। यह अध्याय पुराने नियम के बहुत से विश्वासियों के उद्धार देने वाले सतत् विश्वास का साराँश बताता है और हमारे अपने विश्वास के लिए उदाहरण के रूप में उनका उल्लेख करता है। इब्रानियों अध्याय 11 बल देता है कि इन सब लोगों ने विश्वास से जीवन बिताया, केवल उस समय ही नहीं जब वे पहली बार विश्वास में आए थे बल्कि अपने पूरे जीवन भर। और उनके द्वारा किए गए बहुत से अच्छे कार्य उनके सतत् विश्वास से प्रेरित थे।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 11:4 में हम देखते हैं कि हाबिल के उद्धार देने वाले विश्वास ने उसे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले बलिदान चढ़ाने के लिए प्रेरित किया। हाबिल ने इस सत्य को स्वीकार किया कि परमेश्वर को अपनी इच्छानुसार बलिदान की माँग करने का अधिकार था और हाबिल ने यह भरोसा रखा कि परमेश्वर की इच्छा को मानने पर परमेश्वर उसे आशीष देगा। और अपने विश्वास के कारण, हाबिल ऐसी वस्तुओं को बलि चढ़ाने के लिए तैयार था जो उसके लिए अत्यधिक मूल्यवान थीं।

इब्रानियों 11:7 में हमें बताया गया है कि नूह के उद्धार देने वाले विश्वास ने उसे जहाज बनाने और संसार के पाप के विरूद्ध प्रचार करने के लिए प्रेरित किया। नूह ने इस बात को माना कि परमेश्वर उसे तथा उसके परिवार को बचाने के लिए इस जहाज का प्रयोग करेगा और उसने इस प्रकार से बचाने के लिए यहोवा पर भरोसा किया। इस विश्वास ने उसे जहाज को बनाने और अपने चारों ओर के लोगों को सुसमाचार सुनाने के अत्यधिक कठिन कार्य को करने के लिए प्रेरित किया। उसने अपने पड़ोसियों के उपहास को सहन किया क्योंकि उसे निश्चय था कि परमेश्वर ने सच कहा है और परमेश्वर उसके पड़ोसियों को केवल तभी बचाएगा यदि वे विश्वास में प्रभु की ओर मुड़ते हैं।

इब्रानियों 11:17-19 में हम देखते हैं कि अब्राहम के उद्धार देने वाले विश्वास ने उसे अपने पुत्र इसहाक को बलि चढ़ाने की परमेश्वर की आज्ञा को मानने के लिए प्रेरित किया। अब्राहम ने इसहाक की मृत्यु की माँग करने के परमेश्वर के अधिकार को स्वीकार किया और उसे यह भरोसा था कि परमेश्वर इस कार्य के द्वारा उसे एवं इसहाक दोनों को आशीष देगा। उसने दृढ़ विश्वास किया कि परमेश्वर इसहाक को मुर्दों में से जिला उठाएगा। और अपनी करूणा में अन्ततः परमेश्वर ने अब्राहम के विश्वास को इसहाक की मृत्यु की माँग के बिना ही स्वीकार कर लिया।

इब्रानियों 11:25 में हमें बताया गया है कि मूसा के विश्वास ने उसे इस्राएली दासों के साथ जुड़ने की प्रेरणा दी, यद्यपि वह फिरौन के घराने के एक सदस्य के रूप में आराम से रह सकता था। मूसा ने विलासिता और ताकत के जीवन को त्याग दिया क्योंकि वह इस सत्य से सहमत था कि सारी वास्तविक आशीषें परमेश्वर से आती हैं। और वह अपनी इच्छा से इस्राएल की गुलाम जाति में शामिल हो गया क्योंकि उसे भरोसा था कि परमेश्वर उन्हें उनकी बंधुवाई से छुटकारा देगा।

इससे बढ़कर, पद 33-38 में हम पढ़ते हैं कि पुराने नियम के संतों के विश्वास ने उन्हें राज्य जीतने, न्याय करने, धमकियों का सामना करने, युद्ध में जीतने, यातना सहने, मृत्युदण्ड का बहादुरी से सामना करने, और अन्य कई प्रकार के अत्याचारों एवं दुर्व्यवहारों को सहने के लिए प्रेरित किया। वे इसलिए स्थिर रहने और जीतने में समर्थ हुए क्योंकि उन्हें अपने प्रति परमेश्वर की अच्छाई पर भरोसा था और उन्होंने अपने मुक्तिदाता के रूप में उस पर विश्वास किया। इस सहमति और भरोसे ने उन्हें जीवन की अन्य सारी बातों से बढ़कर परमेश्वर की प्रसन्नता की इच्छा रखने और उसका पीछा करने का बल दिया।

और यही बात आज हमारे लिए भी सत्य है। हमारे लिए आवश्यक है कि हम अपने पूरे जीवनभर विश्वास में स्थिर बने रहें। हमें निरन्तर उन सत्यों को स्वीकार करना चाहिए जिनकी परमेश्वर अपने वचन में घोषणा करता है और हमें ईमानदारी से उसकी आशीषों और उद्धार पर भरोसा रखना चाहिए।

जैसे हम पिछले अध्यायों में देख चुके हैं, जिन में उद्धार देने वाले विश्वास का अभाव है- अर्थात् संसार में रहने वाले अविश्वासी- परमेश्वर के सत्य को अस्वीकार करते हैं और उस पर भरोसा रखने से इन्कार करते हैं। पाप के दास होने के कारण वे परमेश्वर की अच्छाई और सर्वोच्चता से इन्कार करते हैं, उद्धार की पेशकश को ठुकराते हैं, और वे केवल पाप करने के लिए प्रेरित होते हैं।

परन्तु जब हम वास्तव में यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर वही है जिसका वह दावा करता है और हर तरह से उस पर भरोसा करते हैं, तो हमें यह पहचानना चाहिए कि खुशी और संतुष्टि केवल परमेश्वर से मिलती है। हमें यह देखना चाहिए कि उसकी इच्छा को मानना इन आशीषों का मार्ग है। और इस प्रकार, हमारा विश्वास हमें अच्छे कार्यों के लिए भी प्रेरित कर सकता है।

उद्धार देने वाले विश्वास की इस समझ को ध्यान में रखते हुए हम मसीही जीवन में विश्वास की प्रेरणा के कार्य करने के दूसरे तरीके के रूप में मन-फिराव को देखने के लिए तैयार हैं।

मन-फिराव

बाइबल में मन-फिराव हृदय से महसूस किया जाने वाला विश्वास का पहलू है जिसके द्वारा हम सच्चाई से अपने पाप को अस्वीकार करते हैं और उससे फिरते हैं। यह केवल इस बात को मानने और यह विश्वास करने से बढ़कर है कि हम पापी हैं, यह हमारे पापों के लिए खेदित होने से भी बढ़कर है। निःसन्देह, मन-फिराव में ये बातें शामिल हैं। परन्तु जब तक हम वास्तव में हमारे पापों से फिरकर भलाई की ओर नहीं मुड़ते हैं, तब तक हमारा मन-फिराव सच्चा नहीं है।

पवित्रशास्त्र में मन-फिराव और विश्वास अक्सर एक ही सिक्के के दो पहलुओं के रूप में बताए गए हैं। विश्वास मसीह की ओर मुड़ना है और मन-फिराव पाप से फिरना है। और ये दोनों मोड़ एक ही गति में हैं। उनके बीच का मुख्य अन्तर इस बात में है कि विश्वास का वर्णन उस दृष्टिकोण से किया जाता है जिसे हम अपनाना शुरू करते हैं, और मन-फिराव का वर्णन उस दृष्टिकोण से किया जाता है जिसे हम पीछे छोड़ रहे हैं। इस प्रक्रिया में, मन-फिराव के हमारे कार्य मन-फिराव की हमारी भावनाओं से, हमारे पश्चाताप से प्रेरित होते हैं। और ये भावनाएँ विश्वास की अभिव्यक्तियाँ हैं। विश्वास के द्वारा सुसमाचार के एक भाग के रूप में हम मन फिराने के लिए सहमत होते हैं और विश्वास के द्वारा हम यह भरोसा करते हैं कि हमारे मन फिराने पर परमेश्वर हमें क्षमा करेगा।

उदाहरण के लिए, अन्यजाति कुरनेलियुस के विश्वास में आने पर विचार करें, जिसके बारे में प्रेरितों के काम अध्याय 10 में बताया गया है। उस घटना में पतरस को कुरनेलियुस एवं उसके घराने को सुसमाचार सुनाने के लिए भेजा गया था। और जब वह बोल रहा था तो पवित्र आत्मा यह साबित करते हुए उन पर उतरा कि वे उद्धार देने वाले विश्वास में आ गए हैं। बाद में अध्याय 11 में, पतरस यरूशलेम की कलीसिया को इस घटना के बारे में बताता है। और कलीसिया के जवाब ने दृढ़ता से मन-फिराव एवं विश्वास को एक समान ठहराया। प्रेरितों के काम 11:18 में कलीसिया के जवाब को सुनें:

> **(कलीसिया) परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगी, "तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिए मन-फिराव का दान दिया है।" (प्रेरितों के काम 11:18)**

कुरनेलियुस का विश्वास में आना मन-फिराव की सच्ची भावनाओं से प्रेरित था। वास्तव में, उद्धार देने वाले विश्वास और मन-फिराव के बीच संबंध इतना दृढ़ था कि कलीसिया के मन में, विश्वास में आने को संक्षेप में मन-फिराव के अर्थों में बताया जा सकता था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसी प्रकार, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मन-फिराव की प्रेरणा को विश्वास की प्रेरणा के समान ठहराया। जब फरीसी और सदूकी बपतिस्मा लेने के लिए उसके पास आए तो यूहन्ना ने उन्हें मन-फिराव के अनुरूप अच्छे कार्य करने का उपदेश दिया। मत्ती 3:8 में यूहन्ना ने इन शब्दों में उन्हें निर्देश दियाः

> मन-फिराव के योग्य फल लाओ। (मत्ती 3:8)

यूहन्ना का मन-फिराव का बपतिस्मा जीवनभर के प्रभावों के लिए था। यह इसलिए था कि लोग अपने पापों से फिरें और उस बिन्दू के बाद से भलाई को गले लगाएँ। यूहन्ना के लिए, सच्चा मन-फिराव अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करता था।

और प्रेरित पौलुस ने भी यही सिद्धान्त सिखाया। जब वह राजा अग्रिप्पा के सामने यह बताने के लिए खड़ा हुआ कि उसे बन्दी क्यों बनाया गया है तो पौलुस ने सुसमाचार के साराँश को मन-फिराव और अच्छे कार्यों के अर्थ में बताया। प्रेरितों के काम 26:20 में उसके वचनों को सुनें:

> मैं समझाता रहा कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिर कर मन-फिराव के योग्य काम करो। (प्रेरितों के काम 26:20)

पुनः, मन-फिराव एवं परमेश्वर की ओर फिरने का वर्णन एक ही सिक्के के दो पहलुओं के रूप में किया गया है। जब हमारे दिलों में सच्चा पश्चाताप होता है तो हमारा मन-फिराव हमें हमारे पाप से फिरने और परमेश्वर द्वारा स्वीकृत तरीकों से जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

पवित्रशास्त्र में मन-फिराव के बहुत से अविस्मरणीय उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, लूका 19:8 चुंगी लेने वाले जक्कई के मन-फिराव के बारे में बताता है। जब उसने मसीह पर विश्वास किया तो उसने लोगों को धोखा देना बन्द कर दिया, अपनी आधी संपत्ति निर्धनों को बाँट दी, और लोगों से छलपूर्वक लिए गए धन का चार गुना वापस लौटा दिया। वह चोरी के अपने पाप से फिरा और विश्वास एवं अच्छे कार्यों के सतत् जीवन की ओर मुड़ा।

और प्रेरितों के काम अध्याय 9 में बताया गया है कि विश्वास में आने पर, प्रेरित पौलुस ने कलीसिया के विरूद्ध किए गए अपने पापों से मन फिराया और अपनी जान को जोखिम में डालते हुए एवं नम्रता से उन्हीं लोगों के साथ संगति का प्रयत्न करते हुए वह एक सामर्थी सुसमाचारक बना, जिन्हें उसने पहले सताया था। वह कलीसिया को सताने के अपने पाप से फिरा और मसीह की विश्वासयोग्य सेवा की ओर मुड़ा।

और 2 शमूएल अध्याय 12 में हम नातान भविष्यद्वक्ता द्वारा सामना किए जाने के बाद दाऊद के मन-फिराव के बारे में पढ़ते हैं। दाऊद ने बतशेबा के साथ व्यभिचार किया था और अपने पाप को ढाँपने के लिए उसके पति ऊरिय्याह की हत्या का प्रबन्ध किया था। परन्तु दाऊद गहरा पश्चाताप दिखाते हुए और अंगीकार करके अपने पाप से फिरा। और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीने की शुरूआत करने विशेषतः, प्राप्त की गई क्षमा के लिए परमेश्वर की स्तुति करने और दूसरों को भी मन फिराने की शिक्षा देने के द्वारा वह विश्वास की ओर मुड़ा। और उसने अपने मन-फिराव को भजन 51 के द्वारा यादगार बना दिया जो बाइबल में मन-फिराव का संभवतः महानतम भजन है। सुनें दाऊद ने भजन 51:12-14 में क्या लिखा हैः

> अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे और और उदार आत्मा देकर मुझे संभाल। तब मैं अपराधियों को तेरा मार्ग सिखाऊँगा और पापी तेरी ओर फिरेंगे। हे परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, मुझे हत्या के अपराध से छुड़ा ले, तब मैं तेरे धर्म का जय-जयकार करने पाऊँगा। (भजन 51:12-14)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

दाऊद के जीवन में, मन-फिराव ने उसे हर्षित होने, स्वेच्छा से परमेश्वर की आज्ञा मानने, दूसरों को परमेश्वर का वचन सिखाने, और परमेश्वर की स्तुति गाने के लिए प्रेरित किया।

दाऊद का मन-फिराव का उदाहरण मसीहियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि दाऊद पाप करने से पहले अत्यधिक दृढ़ विश्वासी एवं विश्वास का आदर्श था। पाप करने से पूर्व, दाऊद ने अपने जीवनभर बार-बार परमेश्वर पर अपने विश्वास का प्रदर्शन किया था। और परमेश्वर ने दाऊद को नम्र चरवाहे से एक सामर्थी योद्धा और इस्राएल के राजा के रूप में उठाकर उसके विश्वास को आशीषित किया था। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अपने विश्वास को बार-बार साबित करने के पश्चात् जब दाऊद परमेश्वर के अनुग्रह के शिखर पर था, तब वह भयानक पाप में गिर गया। वह एक व्यभिचारी और हत्यारा बन गया। और आधुनिक विश्वासी भी ऐसे ही जघन्य पापों में गिरते हैं। वेस्टमिन्स्टर लघु प्रश्नोत्तरी के प्रश्न एवं उत्तर संख्या 82 बाइबल की इस शिक्षा का अच्छा साराँश देते हैं। इस प्रश्न के उत्तर में:

> क्या कोई व्यक्ति सिद्धता से परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में समर्थ है?

प्रश्नोत्तरी का उत्तर हैः

> पाप में गिरने के बाद से कोई भी व्यक्ति इस जीवन में परमेश्वर की आज्ञाओं को पूर्णतः मानने में समर्थ नहीं है, बल्कि प्रतिदिन मन, वचन और कर्म में उन्हें तोड़ता है।

हम प्रतिदिन पाप में गिरते हैं। और इसका मतलब यह है कि हम पर प्रतिदिन मन फिराने का उत्तरदायित्व एवं अवसर दोनों हैं।

आप शायद जानते होंगे कि वर्ष 1517 में जर्मन धर्मविज्ञानी मार्टिन लूथर ने विटनबर्ग में गिरजाघर के द्वार पर विख्यात पचानबे विचारों को चिपकाने के द्वारा अनजाने में प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार की शुरूआत की थी। परन्तु क्या आप जानते हैं कि लूथर का पहला विचार क्या था? वह केवल इतना थाः

> जब हमारे प्रभु और स्वामी यीशु मसीह ने कहा, “मन फिराओ,” तो उन्होंने विश्वासियों को मन-फिराव से भरे जीवन के लिए बुलाया।

मसीही जीवन विश्वास का जीवन है इसलिए यह मन-फिराव का जीवन भी होना चाहिए। जब हम परमेश्वर के वायदों पर भरोसा करते हुए आगे यात्रा करते हैं तो हम समय-समय पर पीछे मुड़कर देखते हैं। और जब हमें पता चलता है कि हमने किस प्रकार परमेश्वर एवं दूसरों को ठेस पहुँचाई है तो मन-फिराव हमें उनसे क्षमा माँगने और भविष्य में अलग तरीके से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। व्यवहारिक रूप से देखें तो हमारे लिए कई बार हमारे विशिष्ट पापों को मानना और उनका अंगीकार करना असुविधाजनक हो जाता है। परन्तु जब हम परमेश्वर की क्षमा और उसके उद्धार पर भरोसा करते हैं और उसे प्रसन्न करना चाहते हैं, तो इससे हमें स्वयं को नम्र करने, अपने पाप से फिरने, और धार्मिकता का पीछा करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए जो परमेश्वर के राज्य की विशेषता है।

उद्धार देने वाले विश्वास एवं मन-फिराव पर विचार करने के पश्चात्, अब हम विश्वास की प्रेरणा के तीसरे पहलू के रूप में आशा को देखने के लिए तैयार हैं।

आशा

बाइबल आशा के बारे में विभिन्न प्रकार से बताती है। परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए उन समयों के बारे में सोचना सहायक होगा जिनमें बाइबल आशा का वर्णन मसीह में हमारे उद्धार के भावी पहलुओं की ओर केन्द्रित होने के रूप में करती है।

पवित्रशास्त्र सिखाता है कि उद्धार इस जीवन में पूर्ण नहीं होता है। हमें धर्मी ठहराया गया है और हमने पवित्र आत्मा को पाया है। परन्तु हमें अभी सिद्ध नहीं बनाया गया है। हम अब भी पाप से जूझते हैं। हम अब भी मृत्यु एवं रोग का शिकार होते हैं और हम अब भी संसार में बहुत सी समस्याओं और भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष करते हैं। मरने और स्वर्ग में जाने के पश्चात् हम इन समस्याओं से मुक्त हो जाएँगे। परन्तु तब भी हमारा उद्धार पूर्ण नहीं होगा। उस समय भी हम इसी प्रतीक्षा में रहेंगे कि यीशु पृथ्वी पर लौटकर सारी बातों को ठीक और नया करे। उस समय भी हम हमारी तेजोमय पुनरूत्थान प्राप्त देहों और नए आकाश एवं नई पृथ्वी की प्रतीक्षा में रहेंगे।

पुराने नियम में, परमेश्वर के लोगों को बार-बार परमेश्वर में भावी उद्धार की आशा का उपदेश दिया जाता था। और इस उदाहरण का पालन करते हुए, नया नियम सामान्यतः मसीहियत की महान आशा के रूप में उद्धार के भावी पहलुओं में हमारे निश्चय के बारे में बताता है। उदाहरण के लिए, रोमियों 8:23-24 में पौलुस ने हमारे भावी पुनरूत्थान की आशा को इन शब्दों में दर्शाया:

> और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है। (रोमियों 8:23-24)

आशा यह निश्चित विश्वास है कि जिस प्रकार यीशु ने हमें अपना आत्मा दिया, उसी प्रकार संसार को नया बनाने और उसमें हमारी मीरास देने के लिए निश्चित रूप से वापस आएगा। और उद्धार देने वाले विश्वास के समान, इस प्रकार की आशा दृढ़ और निश्चित है।

इब्रानियों अध्याय 6 परमेश्वर के वाचा के वायदों में अब्राहम के विश्वास से जोड़ते हुए इस आशा के बारे में बात करता है। और यह बताता है कि हमारा भावी उद्धार उन वायदों पर आधारित है जिन्हें अब्राहम को दिया गया था। इब्रानियों 6:17-19 को देखें:

> इसलिए जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रकट करना चाहा, कि उसकी मनसा बदल नहीं सकती तो शपथ को बीच में लाया। ताकि... हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं, कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें। वह आशा हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है। (इब्रानियों 6:17-19)

हमारी आशा कोई प्रायोगिक इच्छा या कामना नहीं है। यह स्थिर और निश्चित है क्योंकि परमेश्वर ने हमारे उद्धार को पूरा करने की सौगन्ध खाई है।

इस प्रकार की आशा विभिन्न प्रकार से अच्छे कार्यों की प्रेरणा देती है। 1 थिस्सलुनीकियों 5:6-10 के अनुसार, आशा का टोप सजगता और संयम की प्रेरणा देता है। और इन वचनों की तुलना परमेश्वर के हथियार के बारे में बात करने वाले अन्य वचनों से करने के द्वारा यह स्पष्ट है कि उद्धार के टोप द्वारा स्वयं को नियंत्रित

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

करने में हमारी सहायता करने का एक तरीका हमें शैतानी आक्रमणों और परीक्षाओं से बचाना है। अतः, आशा हमें पाप का विरोध करने का कारण देने के द्वारा अच्छे कार्यों के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य करती है।

जब हम उन आशीषों की प्रतीक्षा में हैं जो हमारे लिए तैयार की गई हैं, तो हम जानते हैं कि पाप करने की बजाय यदि हम प्रभु की आज्ञा मानते हैं तो हमें अत्यधिक आशीष मिलेगी। हम यह भी जानते हैं कि पाप के तात्कालिक सुख उन आशीषों से तुलना के योग्य नहीं हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है।

कुलुस्सियों 1:5 में भी हम सीखते हैं कि हमारे भावी उद्धार की आशा हमें अधिक प्रेम करने और विश्वास में दृढ़ होने के लिए प्रेरित करती है। और निःसन्देह, प्रेम एवं विश्वास दोनों न केवल अपने आप में अच्छे कार्य हैं, बल्कि अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित भी करते हैं। अतः, विश्वास एवं प्रेम को प्रेरित करने के द्वारा, आशा अपार अच्छे कार्यों का स्रोत है।

इसी प्रकार, 1 थिस्सलुनीकियों सिखाता है कि आशा हमारी सहनशीलता को बढ़ाती है, हमारे विश्वास में हमें स्थिर बनाती है, और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले अच्छे कार्यों को करने में हमारी सहायता करती है। परन्तु संभवतः एक प्रेरणा के रूप में आशा के सर्वाधिक पूर्ण साराँश को 1 पतरस 1:13-15 में पाया जा सकता है। देखें पतरस ने वहाँ क्या लिखा हैः

> इस कारण अपनी-अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर, और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रकट होने के समय तुम्हें मिलने वाला है। और आज्ञाकारी बालकों की नाईं अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। **(1 पतरस 1:13-15)**

आशा हमें आज्ञा मानने और हमारे जीवनों के प्रत्येक आयाम में पवित्र बनने के लिए तैयार करती है। यह हमें यीशु मसीह के समान ही कष्ट सहने के लिए तैयार करती है। जैसे हम इब्रानियों 12:2-3 में पढ़ते हैं:

> और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। इसलिए उस पर ध्यान करो, जिस ने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो। **(इब्रानियों 12:2-3)**

हम में से बहुत से लोगों को कभी न कभी आशा न रहने का अनुभव हुआ है। शायद हमें यह महसूस हुआ कि परमेश्वर ने हमें त्याग दिया है या हमें पूरा निश्चय नहीं था कि हमारा विश्वास सत्य था या नहीं। परन्तु कारण चाहे जो भी हो, निराशा के कारण हम असहाय महसूस करने लगते हैं, जैसे कि हम चाहे कुछ भी करें लेकिन कोई बदलाव नहीं ला सकते। यह हमें जीवन में उद्देश्य और उसके अर्थ से वंचित कर देती है। और इसके कारण सरलतम कार्य भी अत्यधिक कठिन प्रतीत होने लगता है।

जब मसीहियों के रूप में हम अपनी आशा खो बैठते हैं, तो हम अक्सर पाप का विरोध करने का प्रयास बन्द कर देते हैं। हम जीवन में हमारे सामने आने वाले संघर्षों को सहने का उद्देश्य खो बैठते हैं और हम जीवन से भी हताश हो सकते हैं। परन्तु जब हमारी आशा दृढ़ होती है तो हम जीवन की बड़ी से बड़ी चुनौतियों को सहने, हर एक बाधा को जीतने के लिए प्रेरित हो सकते हैं क्योंकि हमारी आँखें परमेश्वर पर लगी हैं जिसने हमें सुरक्षित रखने का वायदा किया है।

अब जबकि हम प्रेरणाओं के महत्व को देख चुके हैं और विश्वास की प्रेरणा पर चर्चा कर चुके हैं, तो हम हमारे तीसरे मुख्य बिन्दूः प्रेम की प्रेरणा को संबोधित करने के लिए तैयार हैं।

प्रेम की प्रेरणा

प्रेम मसीही विश्वास का सबसे अधिक जाना-पहचाना परन्तु सबसे कम समझे गए विचारों में से एक है। हम देख सकते हैं कि बाइबल की शिक्षाओं में प्रेम केन्द्रिय है। हमें प्रभु से प्रेम करने, एक-दूसरे से प्रेम करने, और यहाँ तक कि हमारे शत्रुओं से भी प्रेम करने का उपदेश दिया गया है। साथ ही, अधिकाँश लोगों को इसकी बहुत कम जानकारी है कि प्रेम करने की बाइबल की आज्ञाओं को कैसे पूरा करें।

क्या आपको याद है यीशु ने पुराने नियम की शिक्षाओं को संक्षेप में कैसे बताया था? यीशु ने बताया कि व्यवस्था की सबसे बड़ी आज्ञा व्यवस्थाविवरण 6:5 है, जो कहती है कि हमें परमेश्वर से प्रेम करना है। और दूसरी महानतम आज्ञा लैव्यवस्था 19:18 है, जो हम से हमारे पड़ोसियों से प्रेम करने की माँग करती है। और फिर यीशु ने कहा कि ये दोनों आज्ञाएँ पूरे पुराने नियम का सार हैं। मत्ती 22:37-40 में यीशु के वचनों को सुनें:

> "उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।" बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं। **(मत्ती 22:37-40)**

यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं था कि पुराने नियम की अन्य सैंकड़ों आज्ञाएँ इन दोनों से कम महत्वपूर्ण हैं। परन्तु यह कि ये दोनों सबसे बड़ी आज्ञाएँ हैं क्योंकि इनमें दूसरी आज्ञाएँ शामिल हैं, दूसरी आज्ञाएँ इन पर टिकी हैं। ये उन सामान्य सिद्धान्तों को व्यक्त करती हैं जिन्हें अन्य सारी आज्ञाएँ समझाती और लागू करती हैं।

इसी सिद्धान्त को पौलुस ने रोमियों 13:9 और गलातियों 5:14 में सिखाया है। वास्तव में, प्रेम सारे अच्छे कार्यों के लिए इतना आधारभूत है कि यदि यह हमारी प्रेरणाओं में नहीं है, तो हमारे कार्यों को कभी अच्छा नहीं माना जा सकता है।

अतः, हम जानते हैं कि हमारे लिए परमेश्वर एवं पड़ोसियों से प्रेम करना निर्णायक है। परन्तु इस प्रकार का प्रेम कैसा होता है और इसे हमें कैसे प्रेरित करना चाहिए? यीशु के अनुसार, परमेश्वर और हमारे पड़ोसियों से प्रेम करने का तरीका व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं की सही व्याख्या करने एवं उन्हें हमारी परिस्थितियों में लागू करने के द्वारा उनके अनुसार जीना है। निःसन्देह, हमारे लिए उन सारे तरीकों का अनुसंधान करना संभव नहीं है जिनके द्वारा व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यह समझने में हमारी सहायता करते हैं कि प्रेम क्या है। अतः हम एक परिभाषा देंगे जो प्रेम के बारे में बाइबल की शिक्षाओं को तीन सामान्य अवयवों के अर्थों में संक्षेप में बताएगी।

हम संक्षेप में बताएँगे कि प्रेम में निष्ठा, कार्य एवं अनुराग शामिल है। प्रेम के बारे में बाइबल की अधिकाँश शिक्षाएँ इन्हीं तीन अवयवों के अन्तर्गत आती हैं और ये कई तरीकों से आपस में मिलते-जुलते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रत्येक अवयव के दृष्टिकोण से प्रेम पर विचार करने के द्वारा, हम उन तरीकों के बारे में बहुत कुछ सीखने में समर्थ बनेंगे जिनके द्वारा प्रेम हमें अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

प्रेम की हमारी परिभाषा के अनुरूप, हम पहले निष्ठा, फिर कार्य, और उसके बाद अनुराग के बारे में बातचीत करते हुए प्रेम की प्रेरणा की जांच करेंगे। आइए निष्ठा के रूप में प्रेम से आरम्भ करते हैं जो हमें परमेश्वर और हमारे पड़ोसी के प्रति भलाई करने के लिए प्रेरित करता है।

निष्ठा

निष्ठा पर हमारे विचार-विमर्श को हम तीन भागों में विभाजित करेंगे। पहले, हम परमेश्वर और दूसरों के प्रति हमारी वफादारी की बात करेंगे। दूसरा, हम हमारे जीवन के केन्द्रीकरण के बारे में बात करेंगे। और तीसरा, हम अपने उत्तरदायित्व को खोजने के महत्व का वर्णन करेंगे। बाइबल निष्ठा एवं प्रेरणाओं के बारे में मुख्यतः इसी प्रकार से बात करती है, अतः ये हमें निष्ठा को उसके सम्पूर्ण अर्थ में समझने के लिए एक अच्छा आधार देंगे। आइए हम निष्ठा के निर्णायक पहलू के रूप में वफादारी से आरम्भ करते हैं।

वफादारी

वफादारी कई प्रकार से प्रेम के विचार की नींव का पत्थर है। जैसे हमने पिछले एक अध्याय में देखा था, पुराना नियम निरन्तर परमेश्वर का चित्रण अपने लोगों पर वाचा के राजा के रूप में करता है। वह सुजरेन या सर्वोच्च सम्राट है और उसके लोग वासल या सेवक राज्य हैं। और किसी भी राज्य के समान, लोगों का सबसे आधारभूत उत्तरदायित्व राजा के प्रति वफादार रहना है। परन्तु इसका प्रेम से क्या संबंध है?

प्राचीन मध्य-पूर्व (पुराने नियम के संसार) में, सुजरेन और उसके अधीनस्थ राष्ट्र के बीच के संबंध का प्रेम के अर्थों में वर्णन करना सामान्य बात थी। सुजरेन का प्रेम मुख्यतः अपने लोगों के प्रति वाचा की वफादारी के रूप में व्यक्त किया जाता था। वह उन्हें सुरक्षा देता, उन्हें न्याय दिलाता, और उनकी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता था। यह उनके प्रति उसका प्रेम था। और जवाब में अधीनस्थ लोगों को उसके प्रति वफादार रहना था। उन्हें उसके नियमों को मानना था, करों और सेवा के द्वारा उसकी सहायता करनी थी, और अपने राजा के रूप में उसका आदर करना था। यह उसके प्रति उनका प्रेम था। इसी प्रकार, नागरिकों को अपने पड़ोसियों से देशवासियों के समान व्यवहार करते हुए, उनका सम्मान और उनकी देखभाल करते हुए आपस में प्रेम से रहना था।

प्रेम के इस विचार के अनुरूप, प्राचीन मध्य-पूर्व में वाचा के साम्राज्य सुजरेन और उसके अधीनस्थों के बीच संबंध का वर्णन करने के लिए बहुत से रूपकों का प्रयोग करते थे। सुजरेन का वर्णन पिता के रूप में और उसके अधीनस्थों का वर्णन उसके बच्चों के रूप में किया जाता था, जैसा यशायाह 64:8 में है। हम इस संबंध का वर्णन पति और पत्नी के अर्थ में भी देखते हैं, जैसा यिर्मयाह 31:32 में है। इन अर्थों में राजा से अपने संबंधों के बारे में सोचने के द्वारा लोग अपने प्रति उसकी भावनाओं और उसके प्रति अपने उत्तरदायित्वों को समझने में समर्थ थे। राज्य के नागरिक एक ही परिवार के सदस्य थे इसलिए उन्हें आपस में एक-दूसरे के साथ अपने भाइयों और बहनों के समान व्यवहार करना था। इन राजनैतिक संबंधों को परिवार के अर्थों में समझने से लोगों को यह देखने में सहायता मिलती थी कि यह प्रेमपूर्ण निष्ठा और वफादारी दिल से होनी चाहिए थी। यह कृपा की एक आन्तरिक प्रवृत्ति होनी चाहिए थी जो लोगों को राजा का आदर, सम्मान करने और आज्ञा मानने एवं अपने पड़ोसियों के साथ सच्ची दया का व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती थी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस विचार को कार्यरूप में देखने के लिए एक अच्छा स्थान व्यवस्थाविवरण अध्याय 6 है, जहाँ मूसा ने इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर की आज्ञा मानने एवं वफादारी को समझाने के लिए प्रेम के विचार का प्रयोग किया है। यद्यपि पूरे अध्याय का उल्लेख करना उपयोगी होगा परन्तु समय हमें उसके केवल कुछ ही कथनों पर प्रकाश डालने की अनुमति देता है। व्यवस्थाविवरण 6:1, 5 से इन वचनों को सुनें:

> यह वह आज्ञा, और वे विधियाँ और नियम हैं जिन्हें तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है... तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। **(व्यवस्थाविवरण 6:1, 5)**

इस अध्याय में, परमेश्वर के प्रति प्रेम के साराँश को परमेश्वर की आज्ञाओं, नियमों एवं विधियों को मानने के अर्थ में बताया गया है। और इस साराँश के बाद फिर कुछ विशिष्ट तरीके आते हैं जिनके द्वारा इस्राएल को परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को दिखाना था।

उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 6:13-17 वफादारी एवं आज्ञापालन पर प्रकाश डालता है। देखें मूसा ने वहाँ क्या लिखा हैः

> अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना; उसी की सेवा करना, और उसी के नाम की शपथ खाना। तुम पराए देवताओं के, अर्थात् अपने चारों ओर के देशों के लोगों के देवताओं के पीछे न हो लेना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा जो तेरे बीच में वह जल उठने वाला ईश्वर है; कहीं ऐसा न हो कि तेरे परमेश्वर यहोवा का कोप तुझ पर भड़के और वह तुझ को पृथ्वी पर से नष्ट कर डाले। अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं, चितौनियों, और विधियों को, जो उसने तुझ को दी हैं, सावधानी से मानना। **(व्यवस्थाविवरण 6:13-17)**

अब, यदि हमारे प्रति परमेश्वर का प्रेम केवल एक साधारण पिता के अपने बच्चों के प्रति प्रेम के समान होता, तो उसके पीछे चलने में असफल होने पर हम कभी भी हमें नष्ट करने की उसकी इच्छा के बारे में सुनने की अपेक्षा नहीं करते। परन्तु तथ्य यह है कि परमेश्वर का पिता-तुल्य प्रेम अपनी प्रजा के लिए एक राजा का प्रेम है। पितृत्व का रूपक सहायक है क्योंकि यह उन तरीकों पर प्रकाश डालता है जिनके द्वारा परमेश्वर हमारी सुरक्षा करता है, हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है, और हमारी देखभाल करता है। परन्तु पितृत्व केवल एक रूपक है। इस रूपक के पीछे यह तथ्य है कि परमेश्वर हमारा राजा है। वह वास्तव में हम पर राज्य करता है। वह वास्तव में सर्वोपरि है। हम वास्तव में उससे वाचा में बँधे हैं। और इसलिए उसके प्रति हमारे प्रेम को दिखाने का सबसे आधारभूत एवं महत्वपूर्ण तरीका वाचा के प्रति हमारी सच्ची वफादारी है।

और नया नियम कई प्रकार से इस विचार की पुष्टि करता है। उदाहरण के लिए, यीशु हमारा प्रभु और राजा है, और हमें वफादार आज्ञापालन के साथ-साथ उसकी कलीसिया के प्रति हमारी वफादारी के द्वारा उससे प्रेम करना है। हम उससे मुड़ नहीं सकते हैं या उसे अस्वीकार नहीं कर सकते हैं। हम दूसरी वफादारियों को उसके प्रति वफादारी से ऊपर नहीं रख सकते हैं। हम उसके द्वारा दिए गए उत्तरदायित्वों को अस्वीकार नहीं कर सकते हैं। और हम उसके प्रिय लोगों से दुर्व्यवहार नहीं कर सकते हैं और न ही उन्हें त्याग सकते हैं। ऐसे विश्वासघात का अर्थ उससे घृणा करना होगा और हमें उसके दण्ड का सामना करना पड़ेगा। परन्तु यदि हम उसके प्रति प्रेम में स्थिर बने रहते हैं, तो वह हमें अपने राज्य में प्रतिफल देगा।

प्रकाशितवाक्य 1:4-6 पर विचार करें जहाँ यूहन्ना ने अपनी पुस्तक का परिचय इस प्रकार दिया हैः

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> यीशु मसीह की ओर से... जो पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहेः जो हम से प्रेम करता है और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है। और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन। **(प्रकाशितवाक्य 1:4-6)**

और जैसे यीशु ने यूहन्ना 14:15 में कहा हैः

> यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे। **(यूहन्ना 14:15)**

हमारे साथ परमेश्वर के वाचा के संबंध में, वफादारी एक सकारात्मक गुण है जो हमें हमारे प्रभु और राजा की सेवा एवं उन लोगों का आदर एवं देखभाल करने की प्रेरणा देती है जो हमारे साथ उसके राज्य में जीते हैं। और यह एक नकारात्मक माँग भी है जो हमारे जीवनों में अन्य ईश्वरों एवं मूरतों के प्रति निष्ठा को प्रतिबन्धित करती है।

वफादारी की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हम उस तरीके के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं जिसके द्वारा परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम हम से जीवन में एक नए केन्द्रीकरण को अपनाने की माँग करता है।

केन्द्रीकरण

परमेश्वर के प्रति हमारी निष्ठा हमारे जीवनों के प्रत्येक क्षेत्र को स्पर्श करती है। जीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं है जो उसके राज्य के बाहर या परमेश्वर के सर्वोपरि शासन के परे हो। इस कारण, हमारे जीवन पूर्णतः उस पर केन्द्रित होने चाहिए। परमेश्वर और उसका राज्य हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता, हमारी इच्छाओं का मूल, और हमारे दृष्टिकोण के केन्द्र होने चाहिए। हम जो कुछ सोचते, कहते और करते हैं उन सब में हमारे अन्दर परमेश्वर और उसके लोगों के लाभ के लिए कार्य करने की प्रवृत्ति होनी चाहिए।

जैसे हम देख चुके हैं, पहली महान आज्ञा, व्यवस्थाविवरण 6:5 मानवीय व्यक्ति को संक्षेप में मन, प्राण और शक्ति के अर्थ में बताती है। ये शब्द हमारे अस्तित्व के विभिन्न भागों का प्रतिनिधित्व करने के अर्थ में नहीं हैं, जैसे कि हमें तीन या चार अलग-अलग भागों में विभाजित किया जा सकता हो। इसके विपरीत, इनमें से प्रत्येक शब्द सम्पूर्ण व्यक्ति के बारे में बताता है। इब्रानी शब्दावली में, हमारा हृदय केवल हमारी भावनाएँ ही नहीं है बल्कि हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व का केन्द्र है जिसमें हमारा मन, हमारा विवेक, और हमारे चरित्र का प्रत्येक पहलू शामिल है। इसी प्रकार, हमारा प्राण हमारा सम्पूर्ण अस्तित्व है जिसमें हमारा चेतन मन एवं हमारी अर्द्धचेतन इच्छाएँ दोनों शामिल हैं। और व्यवस्थाविवरण में "शक्ति" के लिए प्रयुक्त शब्द हमारे शरीरों और कार्यों से बढ़कर परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम की तीव्रता और उस प्रेम का पीछा करने के लिए हमारी सारी क्षमताओं का प्रयोग करने के दृढ़ निश्चय को बताता है। अतः, इनमें से प्रत्येक शब्द के द्वारा पवित्रशास्त्र हमें उपदेश देता है कि हम अपने पूर्ण व्यक्तित्व के साथ पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति समर्पित रहें।

और इस महान आज्ञा को हमारे पड़ोसियों से प्रेम करने की आज्ञा के साथ जोड़ने के द्वारा यीशु ने संकेत दिया कि दूसरे लोगों और विशेषतः परमेश्वर के राज्य के हमारे साथी नागरिकों के प्रति हमारा प्रेम इसी प्रकार का होना चाहिए। परमेश्वर और उसके लोगों के प्रति ये प्रतिबद्धताएँ हमारे जीवन का प्राथमिक केन्द्रीकरण होनी चाहिए। ये हमारी आन्तरिक प्रवृत्ति की सर्वाधिक आधारभूत प्रतिबद्धताएँ होनी चाहिए।

निःसन्देह, जीवन में उचित केन्द्रीकरण का महानतम उदाहरण यीशु है। यीशु ने अपने जीवन को परमेश्वर और उन लोगों पर केन्द्रित किया जिन्हें बचाने के लिए वह आया था। इस केन्द्रीकरण ने उसे सारी बातों में पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा मानने और उन लोगों के लिए स्वयं को स्वेच्छा से बलिदान करने के

लिए प्रेरित किया जिनसे वह प्रेम करता था। परमेश्वर और हमारे पड़ोसियों के प्रति हमारी निष्ठा के द्वारा हमें भी हमारे जीवनों में इसी केन्द्रीकरण पर आना चाहिए। इससे हमें यीशु के समान ही बलिदान करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। जैसे हम 1 यूहन्ना 3:16 में पढ़ते हैं:

> हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए। **(1 यूहन्ना 3:16)**

जब हम परमेश्वर को हमारे जीवनों का केन्द्र बनाते हैं तो यह हमारे विभिन्न विचारों से लेकर लोगों से व्यवहार करने के हमारे तरीके और विवाह के लिए जीवनसाथी को चुनने तक के हमारे सारे निर्णयों को प्रभावित करता है। जब हम अपने जीवन को परमेश्वर पर केन्द्रित करने में असफल हो जाते हैं तो हम अपने जीवन को अन्य प्राथमिकताओं पर केन्द्रित कर बैठते हैं जैसे, धन, ताकत, प्रभाव, मनोरंजन, या करिश्माई व्यक्ति। और ये केन्द्रीकरण हमारे व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं परन्तु इसे वे इस प्रकार से करते हैं जो परमेश्वर द्वारा वचन में दिए घोषणापत्र से अलग एक घोषणापत्र को आगे बढ़ाता है। परन्तु जब हम अपने जीवनों को परमेश्वर और उसके लोगों पर केन्द्रित करते हैं तो हम परमेश्वर के राज्य के घोषणापत्र का पालन करते हैं और हम इस प्रकार से जीने के लिए प्रेरित होते हैं जिससे वह प्रसन्न हो।

वफादारी और केन्द्रीकरण के मामलों को संबोधित करने के पश्चात्, हम उस तरीके पर विचार करने के लिए तैयार हैं जिससे परमेश्वर और पड़ोसियों के प्रति हमारे प्रेम को प्रभु के सामने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारे उत्तरदायित्व को खोजने के लिए हमें प्रेरित करना चाहिए।

उत्तरदायित्व

प्रेम परमेश्वर के प्रति आज्ञापालन और सेवा का एक केन्द्रीकरण है। अतः, इससे हमें परमेश्वर की सारी आज्ञाओं को मानने के लिए सुव्यवस्थित होना चाहिए। परन्तु इसे हम कैसे कर सकते हैं? क्या इसका मतलब व्यवस्था में दी गई सारी विधियों और शर्तों को गिनना और फिर उन बातों को करना है जिन्हें स्पष्टतः उनमें बताया गया है? या क्या हमें प्रभु की सेवा इस प्रकार से करनी चाहिए जो पवित्रशास्त्र में वर्णित विशिष्ट उदाहरणों के परे जाए? इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर के प्रति हमारी निष्ठा से हमें परमेश्वर के प्रति उत्तरदायित्व के अतिरिक्त तरीकों को खोजने के लिए प्रेरित होना चाहिए।

इसका अर्थ समझने के लिए, आइए हम दस आज्ञाओं को देखते हैं। निर्गमन 20:3-17 में दी गई आज्ञाएँ इस प्रकार हैं:

- तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।
- तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना।
- तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।
- तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।
- तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
- तू हत्या न करना।
- तू व्यभिचार न करना।
- तू चोरी न करना।
- तू किसी के विरूद्ध झूठी गवाही न देना।

- तू लालच न करना।

इनमें से आठ आज्ञाएँ विशेषतः निश्चित व्यवहारों को प्रतिबन्धित करती हैं और स्पष्ट रूप से कुछ ऐसा नहीं बताती हैं जिसे हमें सक्रियता से करना चाहिए। यदि हम पवित्रशास्त्र में स्पष्टता से वर्णित हमारे सारे उत्तरदायित्वों की कल्पना करें तो हमारा निष्कर्ष यह होगा कि हमें सक्रियता से केवल दो ही बातों को करना हैः विश्रामदिन को मानना और माता-पिता का आदर करना। इसी प्रकार, हम यह निष्कर्ष निकालेंगे कि हत्या के विरूद्ध दी गई आज्ञा हत्या पर प्रतिबन्ध लगाती है, न कि अधार्मिक क्रोध जैसी बातों पर। परन्तु हम गलत होंगे। तथ्य यह है कि बाइबल इन आज्ञाओं को नियमित रूप से हमारे जीवनों के प्रत्येक क्षेत्र पर लागू करती है।

केवल एक उदाहरण के रूप में, मत्ती 5:21-22 पर विचार करें जहाँ यीशु ने निम्नलिखित शिक्षा को प्रस्तुत किया हैः

> तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि हत्या न करना, और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। (मत्ती 5:21-22)

यहाँ यीशु ने उसका उल्लेख किया है जो लोगों से कहा गया था, अर्थात्, पवित्रशास्त्र के कुछ यहूदी व्याख्याकारों द्वारा उन्हें जो सिखाया गया था।

यदि हम परमेश्वर के सामने हमारे उत्तरदायित्वों की खोज नहीं करते हैं तो इस प्रकार की मानसिकता का विकसित होना बहुत आसान है कि परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों के एक अत्यधिक छोटे भाग को बाँधता है और उसके प्रति हमारी निष्ठा अत्यधिक सीमित है। हम यह सोचने की गलती कर सकते हैं कि हमारी परिस्थितियाँ पवित्रशास्त्र से भिन्न होने के कारण परमेश्वर की शर्तें हम पर लागू नहीं होती हैं। इससे हम अपने उत्तरदायित्वों से अनजान रह जाते हैं और पाप के विरूद्ध अपनी सुरक्षा नहीं कर पाते हैं।

परन्तु जब हम परमेश्वर के सामने हमारे उत्तरदायित्वों की उचित रूप से खोज करते हैं, यह समझते हुए कि हम अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसके प्रति जवाबदेह हैं, तो हम उसके द्वारा स्वीकृत निर्णय लेने के लिए बेहतर स्थिति में होते हैं। परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम के कारण हमें परमेश्वर की शर्तों और हमारे पड़ोसियों की आवश्यकताओं के सीमित ज्ञान से असंतुष्ट होना चाहिए। इससे हमें हमारे महान राजा और उसके लोगों के प्रति हमारे सारे उत्तरदायित्वों को खोजने की प्रेरणा मिलनी चाहिए ताकि हम अपने कर्तव्य को संभावित सर्वोत्तम तरीके से पूरा कर सकें।

निष्ठा के बारे में बात करने के पश्चात्, अब हमें कार्य के बिन्दू की ओर मुड़ना चाहिए जो बताता है कि हमें परमेश्वर और एक-दूसरे के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए।

कार्य

कार्य पर हमारी चर्चा दो भागों में विभाजित होगी। विशेषतः, हम उन तरीकों के बारे में बात करेंगे जिनके द्वारा परमेश्वर के कार्य हमारे अपने व्यवहार के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करते हैं। एक तरफ, हम पश्चातापी अनुग्रह के परमेश्वर के कार्यों को देखेंगे। और दूसरी तरफ, हम सामान्य अनुग्रह के उसके कार्यों को देखेंगे। आइए हम देखें कि परमेश्वर का पश्चातापी अनुग्रह किस प्रकार हमारे कार्यों के लिए एक आदर्श का काम करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पश्चातापी अनुग्रह

जैसे हमने इस श्रृंखला के दौरान कहा है, परमेश्वर का चरित्र हमारा अन्तिम नैतिक प्रमाप है। और परमेश्वर के कार्य हमेशा उसके चरित्र के अनुसार होते हैं इसलिए उसके सारे कार्य उसके चरित्र की सिद्ध अभिव्यक्तियाँ हैं।

इसीलिए पवित्रशास्त्र सामान्यतः हमें हमारे चरित्र और कार्यों दोनों को परमेश्वर के अनुरूप बनाने का उपदेश देता है, विशेषतः उनके बचाव और छुटकारे के संबंध में जिनसे वह प्रेम करता है। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 5:13-15 में यहोवा ने पूरे इस्राएल से सब्त को मानने की माँग की। स्वामियों, सेवकों, परदेशियों और यहाँ तक कि पशुओं को भी उस दिन उस परिश्रम से विश्राम के अनुकरण में छुट्टी मिली जिसे परमेश्वर ने सम्पूर्ण जाति को मिस्र की गुलामी से छुटकारा दिलाते समय दिया था।

इसी प्रकार, मत्ती 18:23-25 में यीशु ने सिखाया कि हमें परमेश्वर की क्षमा का अनुकरण करना है। हमें उन्हें क्षमा करना है जो हमारे विरूद्ध पाप करते हैं क्योंकि परमेश्वर के विरूद्ध पाप करने के लिए उसने हमें क्षमा किया है। और परमेश्वर द्वारा हमारी क्षमा के समान ही दूसरों के लिए हमारी क्षमा भी सच्ची और दिल से होनी चाहिए, उनके प्रति सच्चे तरस से प्रेरित होनी चाहिए।

पवित्रशास्त्र सामान्य रूप से हमें सिखाता है कि हमें उस प्रेम के अनुकरण में एक-दूसरे से प्रेम रखना है चाहिए जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए दिखाया है। और निःसन्देह, इसका महानतम उदाहरण मसीह है, जो हमारे पापों के लिए मरा। 1 यूहन्ना 4:9-11 में यूहन्ना की शिक्षा को सुनें:

> जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। प्रेम इसमें नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा। हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए। **(1 यूहन्ना 4:9-11)**

पापियों के रूप में हमने परमेश्वर को ठेस पहुँचाई थी। हम उससे घृणा करते थे। हम शत्रुओं के रूप में उसके विरूद्ध थे। हम दण्ड के योग्य थे, न कि दया के। फिर भी, हमें बचाने के लिए परमेश्वर अपने पुत्र को बलिदान करने के लिए तैयार था जिससे वह सबसे बढ़कर प्रेम करता था। और उसके उदाहरण का पालन करते हुए, हमें भी दूसरों की खातिर कष्ट सहने के लिए तैयार रहना चाहिए।

निःसन्देह, हम किसी दूसरे व्यक्ति की ओर से कभी भी एक प्रायश्चित का बलिदान नहीं कर सकते हैं- और पवित्रशास्त्र हमें ऐसा करने के लिए नहीं कहता है। परन्तु यह हमें दूसरों के प्रति उसी प्रकार का प्रेम दिखाने के लिए कहता है जैसा परमेश्वर ने प्रायश्चित में हमारे प्रति दिखाया है। हम अपने स्वयं के बच्चों के लिए ऐसे बलिदान खुशी से करेंगे क्योंकि उनके जीवनों को हम स्वयं से भी बढ़कर महत्व देते हैं। और परमेश्वर भी अपने बच्चों को उतना ही महत्व देते हुए हम से माँग करता है कि हम उसके अनुग्रह का अनुसरण करें। जैसे यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 3:16-18 में लिखा हैः

> हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए। पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है? हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। **(1 यूहन्ना 3:16-18)**

जब हम परमेश्वर के पश्चातापी अनुग्रह का अनुसरण करने में असफल हो जाते हैं तो यह आसान हो जाता है कि हमारे तथाकथित "प्रेम" में केवल होठों की सेवा शामिल हो। उदाहरण के लिए, हमारे लिए यह सोचना आसान है कि निर्धन अपनी निर्धनता के योग्य हैं और उनकी देखभाल करना किसी और का उत्तरदायित्व है। हमारे लिए यह आसान है कि हम अपने स्वयं के हितों को दूसरों के हितों से ऊपर रखें और दूसरों की सहायता करने के कठिन परिश्रम की बजाय आराम को प्राथमिकता दें।

परन्तु मसीह का अनुग्रहकारी उदाहरण हमें यह दायित्व देता है कि हम मसीह में अपने भाइयों और बहनों की देखभाल और सुरक्षा के लिए अपने धन और संपत्ति, और यहाँ तक कि अपने जीवनों को भी त्याग दें। यह हमें सिखाता है कि हम पूरे दिल से उनसे प्रेम करें ताकि हम उनके लिए त्याग करने, कष्ट सहने, और यहाँ तक कि मरने के लिए भी प्रेरित हों।

परमेश्वर के पश्चातापी अनुग्रह की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, अब हम उसके सामान्य अनुग्रह द्वारा हमारे अनुसरण के लिए उदाहरण उपलब्ध करवाने के तरीके के बारे में विचार करने के लिए तैयार हैं।

सामान्य अनुग्रह

सामान्य अनुग्रह धर्मविज्ञान में एक तकनीकी शब्द है जो उन लोगों के प्रति परमेश्वर की दया को बताता है जो कभी उद्धार नहीं पाएँगे। हम में से जो लोग अन्ततः उद्धार पाएँगे, उनके लिए परमेश्वर का अनुग्रह हमेशा छुटकारे की ओर कार्य करता है। परन्तु परमेश्वर उन लोगों को छुटकारा न देने वाली दया या "सामान्य अनुग्रह" भी देता है, जो कभी उद्धार नहीं पाएँगे।

पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह को सारी मानवता के लिए परमेश्वर के प्रेम की अभिव्यक्ति बताया। निश्चित रूप से, मानवता के लिए परमेश्वर का सामान्य प्रेम विश्वासियों के लिए उसके प्रेम की महानता के आस-पास भी नहीं है। फिर भी, यह सच्चा और वास्तविक है और हमारे अनुकरण के लिए एक आदर्श उपलब्ध करवाता है। मत्ती 5:44-48 में यीशु ने सामान्य अनुग्रह पर निम्नलिखित शिक्षा दीः

> अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनो पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है... इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है। (मत्ती 5:44-48)

जैसे यीशु ने सिखाया, परमेश्वर की सिद्धता में दुष्टों के लिए और उन लोगों के लिए भी प्रेम शामिल है, जो कभी मसीह पर विश्वास नहीं करेंगे। और परमेश्वर इस प्रेम को कई प्रकार से व्यक्त करता है जैसे, सूर्य की रोशनी और वर्षा के द्वारा। परमेश्वर सब पर दया करता है, उन्हें स्थिरता और प्रकृति में उत्पादकता देता है, और उन्हें इस जीवन में फलने-फूलने की अनुमति देता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर हमेशा दयालु है- नहीं। कई बार वह दुष्टों को दण्ड देता है। परन्तु सामान्यतः, वह अपने शत्रुओं पर भी सहनशीलता और उदारता दिखाता है।

और हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं इसलिए हमें उन लोगों से भी प्रेम करना चाहिए जिनसे वह प्रेम करता है। परमेश्वर के उदाहरण के अनुरूप, हमारे प्रेम से हमें सब लोगों के प्रति भले और दयालु बनने की प्रेरणा मिलनी चाहिए, चाहे वे हम से घृणा करें और हमें सताएँ। उदाहरण के लिए, निर्गमन 23:4-5 में परमेश्वर की व्यवस्था हम से शत्रुओं के सामान की सुरक्षा करने की माँग करती है। देखें वहाँ क्या लिखा हैः

> यदि तेरे शत्रु का बैल या गधा भटकता हुआ तुझे मिले तो उसे उसके पास अवश्य फेर ले आना। फिर यदि तू अपने बैरी के गधे को बोझ के मारे दबा हुआ देखे तो चाहे उसको उसके स्वामी के लिए छुड़ाने के लिए तेरा मन न चाहे, तो भी अवश्य स्वामी का साथ देकर उसे छुड़ा लेना। **(निर्गमन 23:4-5)**

ये निर्देश ऐसे संदर्भ में सामने आते हैं जो न्याय के बारे में बात करता है। विचार यह है कि हमें सब लोगों के लिए न्याय को सुरक्षित रखना चाहिए, चाहे वे हम से नफरत ही क्यों न करते हों।

परन्तु यीशु ने हमें हमारे शत्रुओं के लिए न्याय को सुरक्षित रखना ही नहीं सिखाया है; यीशु ने हमें उनसे प्रेम करना सिखाया है। हमें उन्हें न्याय दिलाना चाहिए क्योंकि हम ईमानदारी से यह चाहते हैं कि उन्हें न्याय के लाभ और सुरक्षा मिले, क्योंकि हम उस परमेश्वर से प्रेम करते हैं जो न्याय का प्रमाप है।

हमारे शत्रुओं के लिए हमारे अन्दर इस प्रकार के प्रेम का न होना आसान है। हम सामान्यतः उनकी आवश्यकताओं को अनदेखा करने को प्राथमिकता देते हैं। और सबसे बद्तर यह हो सकता है कि हम उनके विरूद्ध बदला लेने के लिए प्रेरित होते हैं और उनके अन्याय से पीड़ित होने पर हम आनन्दित होते हैं। परन्तु ये दृष्टिकोण परमेश्वर के चरित्र की विशेषताएँ नहीं हैं; परमेश्वर ने हमारे लिए उन प्रेरणाओं का आदर्श नहीं दिखाया है। जब हम इन्हें करते हैं तो हम स्वार्थी तरीकों से सोचते हैं, स्वयं को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। हम पापी संसार और शैतान के उदाहरणों का पालन कर रहे हैं, दया और धार्मिकता के प्रभु का नहीं।

किसी ऐसे व्यक्ति के साथ झगड़े के बारे में सोचें जिससे आप प्रेम करते हैं। संभवतः वह कोई अभिभावक या एक बच्चा, जीवनसाथी, या कोई घनिष्ट मित्र हो सकता है। कई बार ये झगड़े क्रोध और कठोर भावनाओं को उत्पन्न करते हैं। परन्तु अधिकाँशतः, हमारा क्रोध इन लोगों के प्रति हमारे प्रेम को दबाता नहीं है। हमारे क्रोध में भी, हम उनके प्रति समर्पित रहते हैं। हम उनसे प्रेम करते हैं। और उस समय भी हम उनके साथ गलत व्यवहार होते हुए देखने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

बहुत से अर्थों में, परमेश्वर चाहता है कि हम अपने शत्रुओं के बारे में इसी प्रकार महसूस करें। हमें उनकी भलाई की सच्ची परवाह होनी चाहिए। और यह सच्ची परवाह कार्य में प्रदर्शित होनी चाहिए। इससे हमें उनके प्रति दयालु होने, उनके लिए प्रार्थना करने, उनकी सुरक्षा करने, और आवश्यकता के समय उनकी सहायता करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए।

अब, हमें परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह का अनुकरण करने के लिए कम से कम एक योग्यता की पेशकश करने की आवश्यकता है। विशेषतः, हमें यह बताने की आवश्यकता है कि इस प्रकार का प्रेम न्याय की इच्छा को रोकता नहीं है। परमेश्वर कई बार दुष्ट को दण्ड देने के लिए अपनी दया को रोक लेता है। और परमेश्वर के दण्ड हमेशा अच्छे और सही होते हैं। इससे बढ़कर, पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि न्याय प्रेम का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जैसे हम भजन 33:5 में पढ़ते हैं:

> वह धर्म और न्याय से प्रीति रखता है; यहोवा की करूणा से पृथ्वी भरपूर है। **(भजन 33:5)**

हमारे साथ दुर्व्यवहार करने वालों के विरूद्ध न्याय की इच्छा रखना प्रेम से मेल नहीं खाता है। वास्तव में, आदर्श रूप में, जब हम सच्चाई से परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह का अनुकरण करते हैं तो न्याय के लिए हमारी इच्छा, परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम, हमारे पड़ोसियों के लिए हमारा प्रेम, और हमारे शत्रुओं के लिए हमारा प्रेम, सब असाधारण रूप से समान होते हैं। और कारण यह हैः परमेश्वर, जो न्याय है, वह अक्सर दण्ड

का प्रयोग पापियों को मन-फिराव और उद्धार की ओर लाने के लिए करता है। उदाहरण के लिए, जकर्याह 14:16 में जातियों के विरूद्ध परमेश्वर का न्याय मन-फिराव की ओर लाता हैः

> तब जितने लोग यरूशलेम पर चढ़ाई करने वाली सब जातियों में से बचे रहेंगे, वे प्रति वर्ष राजा अर्थात् सेनाओं के यहोवा को दण्डवत् करने के लिए यरूशलेम को जाया करेंगे। **(जकर्याह 14:16)**

जब हम परमेश्वर के न्याय की इच्छा रखते हैं, तब भी हमारी अन्तिम प्रेरणा प्रेम होनी चाहिए। हमें आशा रखनी चाहिए कि परमेश्वर का न्याय जीवन की ओर लाने वाले मन-फिराव को लाएगा।

परमेश्वर का प्रेम जटिल है। यदि हम इसे अत्यधिक सरल करें तो हम यह गलत निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि दुष्टों के विरूद्ध न्याय की इच्छा रखने के साथ-साथ हम अपने पड़ोसियों से प्रेम नहीं कर सकते हैं, या संसार की दुष्टता को देखते समय हम उनसे प्रेम नहीं कर सकते हैं। परन्तु पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर के प्रेम में न्याय की इच्छा और दुष्टता से घृणा दोनों शामिल हैं। अतः, मसीहियों के रूप में हमारे लिए समाधान यह सुनिश्चित करना है कि हमारी न्याय की इच्छाएँ और दुष्टता से घृणा सारी मानवता के लिए हमारे प्रेम का भाग हैं। जब इन भावनाओं को प्रेम से अलग कर दिया जाता है तो वे पापमय हो जाती हैं। परन्तु जब वे प्रेम की अभिव्यक्तियाँ होती हैं तो वे धार्मिक होती हैं और हमें इस प्रकार से सोचने, बोलने और कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं जिसे परमेश्वर मान्यता देता है।

निष्ठा और कार्य के बारे में बात करने के पश्चात्, अब हम अनुराग की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं जो प्रेम का सर्वाधिक स्पष्ट भावनात्मक पहलू है।

अनुराग

मसीही शिक्षक कई बार बाइबल के प्रेम के बारे में इस प्रकार बात करते हैं जैसे कि वह पूरी तरह से कार्यों और विचारों से बना है। उदाहरण के लिए, कुछ लोग तर्क देते हैं कि बाइबल हमें सक्रिय तरीकों से प्रेम करने का उपदेश देती है और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम भावनात्मक रूप से कैसा महसूस करते हैं। वे कहते हैं परमेश्वर के प्रति प्रेम का अर्थ बाहरी रूप से परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना और इस प्रकार के कार्य करना है जैसे, कलीसिया में जाना, प्रार्थनाओं को बोलना, बाइबल पढ़ना, और मनन करना। और पड़ोसी से प्रेम का अर्थ है, हमारे क्रोध पर नियंत्रण रखना, नम्र बनना, घमण्ड करने से बचना, आदि। परन्तु बाइबल इस विषय पर हमें एक अत्यधिक भिन्न दृष्टिकोण देती है। 1 कुरिन्थियों 13:1-3 के वचनों को याद करें:

> यदि मैं मनुष्यों, और स्वर्गदूतों की बोलियाँ बोलूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झनझनाती हुई झाँझ हूँ। और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिए दे दूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। **(1 कुरिन्थियों 13:1-3)**

पौलुस द्वारा यहाँ वर्णित अच्छे कार्य नैतिक रूप से तब अच्छे होते हैं जब वे अनुराग से प्रेरित हों। परन्तु जब ऐसा नहीं होता तो वे बेकार हैं। प्रेम के बिना, अन्य भाषाओं का आत्मिक वरदान केवल झनझनाती हुई झाँझ के समान हो जाता है। जिसके पास भविष्यद्वाणी, ज्ञान और विश्वास है वह कुछ नहीं है। और जो

अपनी संपत्ति और अपने जीवन को भी त्याग देता है, उसे कुछ नहीं मिलता है। प्रेम हमारे द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य का निर्णायक भावनात्मक पहलू है। इसके बिना, हमारे किसी भी कार्य को अच्छा नहीं माना जा सकता है।

मत्ती 15:7-9 पर भी विचार करें जहाँ यीशु यह तीखी आलोचना करते हैं:

> हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक की कि "ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ से दूर रहता है। और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं।" **(मत्ती 15:7-9)**

यीशु का मतलब आसान था-अनुराग के बिना परमेश्वर का सम्मान और उसकी आराधना करना कपट है। चाहे हमारे कार्य परमेश्वर के लिए या दूसरे लोगों के लिए हों, वे अनुराग की सच्ची भावना से प्रेरित होने चाहिए।

प्रेम के आयामों के रूप में हम बहुत से विभिन्न अनुरागों या भावनाओं की चर्चा कर सकते हैं जो अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करते हैं परन्तु समय हमें केवल दो का वर्णन करने की ही अनुमति देता है। पहला, हम परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता के बारे में बात करेंगे। और दूसरा, हम परमेश्वर के भय पर विचार करेंगे। आइए हम देखें कि कृतज्ञता किस प्रकार हमें प्रभु को प्रसन्न करने और हमारे पड़ोसियों की परवाह करने के लिए प्रेरित करती है।

कृतज्ञता

पवित्रशास्त्र में, परमेश्वर के अनुग्रह और भलाई के प्रति कृतज्ञता हमारा सामान्य प्रत्युत्तर होना चाहिए और इससे हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। उदाहरण के लिए, दस आज्ञाओं का परिचय परमेश्वर की भलाई के एक कथन द्वारा दिया जाता है। इस भलाई के द्वारा हमें कृतज्ञ होना चाहिए कि हम उसके बाद दी गई आज्ञाओं का पालन करें। देखें निर्गमन 20:2 दस आज्ञाओं का परिचय किस प्रकार देता हैः

> मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे दासत्व के घर, अर्थात्, मिस्र देश से निकाल लाया है। **(निर्गमन 20:2)**

परमेश्वर द्वारा इस्राएल को दस आज्ञाएँ देते समय मिस्र से उनका निकलना उस समय तक की छुटकारे की महानतम घटना थी। यह पुराने नियम की घटना नये नियम में मसीह के बलिदान के बराबर है-एक ऐसी घटना जिसका अपने पाठकों को कृतज्ञता की प्रेरणा देने के लिए बाइबल के लेखकों ने बार-बार वर्णन किया है।

निर्गमन अध्याय 20 में दस आज्ञाओं के इस परिचय के तुरन्त पश्चात्, हम दस आज्ञाओं को पाते हैं। जैसे सदियों से बहुत से धर्मविज्ञानियों ने ध्यान दिया है, ये आज्ञाएँ दो समूहों में विभाजित हैं: पहला, व्यवस्थाएँ जो संक्षेप में बताती हैं कि परमेश्वर से प्रेम करने का क्या अर्थ है; और दूसरा, हमारे पड़ोसियों से प्रेम के अर्थ का साराँश बताने वाली व्यवस्थाएँ।

अतः, दस आज्ञाओं में, हम पाते हैं कि परमेश्वर के प्रति सच्ची कृतज्ञता हमें हमारे राजा के रूप में परमेश्वर और उसके प्रिय प्राणियों और बच्चों के रूप में मनुष्यों, दोनों के प्रति निष्ठा, कार्य और अनुराग के लिए प्रेरित करने वाली प्रेरणा होनी चाहिए।

और नया नियम इसी सिद्धान्त को सिखाता है। जैसे हम कह चुके हैं, इसमें हमारी कृतज्ञता के आधार के रूप में नियमित रूप से मसीह के बलिदान का उल्लेख करने की प्रवृत्ति है, परन्तु विचार वही हैः परमेश्वर की भलाई हमारे प्रेम और आज्ञापालन के योग्य है। जैसे यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 4:19 में बताया हैः

> हम इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि पहले उस ने हम से प्रेम किया। (1 यूहन्ना 4:19)

जैसे पौलुस ने कुलुस्सियों 3:17 में लिखा हैः

> और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो। (कुलुस्सियों 3:17)

परमेश्वर के पुत्र के उपहार के लिए हमारी कृतज्ञता द्वारा हमें प्रभु से प्रेम करने और इस प्रेम को उसके नाम में उसकी महिमा के लिए किए गए अच्छे कार्यों के द्वारा अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

यह समझना कठिन नहीं है कि कृतज्ञता कैसे एक प्रेरणा के रूप में कार्य करती है। हम में से अधिकाँश लोगों के पास कृतज्ञ होने के बहुत से कारण हैं। हम हमारी देखभाल करने के लिए हमारे माता-पिता के प्रति कृतज्ञ हो सकते हैं, या हमें सिखाने के लिए किसी शिक्षक के प्रति कृतज्ञ हो सकते हैं। जब लोग हमें खतरे या तनाव से बचाते हैं तो हम कृतज्ञ होते हैं। और इन सारे मामलों में, हमारा प्रत्युत्तर अक्सर उन लोगों को धन्यवाद देना और यदि संभव हो तो बदले में उनके लिए कुछ करना होता है जिन्होंने हमारी सहायता की है।

दूसरी तरफ, हमारे जीवनों में ऐसे लोगों के बारे में सोचना भी आसान होना चाहिए जो कृतघ्न रहे हैं, जिन्होंने दूसरों के द्वारा उनके लिए की गई अच्छी बातों की सराहना नहीं की है। जब हम कृतघ्न होते हैं तो हमारे अन्दर उन लोगों को खुश करने की कोई इच्छा नहीं होती है जो हमारी सहायता करते हैं। इसके विपरीत, हमारे अन्दर उनकी सहायता को इस प्रकार से ग्रहण करने की प्रवृत्ति होती है जैसे कि यह हमारा उचित प्रतिफल हो, और यदि वे हमारी अपेक्षा के अनुसार नहीं करते हैं तो हम उनसे क्षुब्ध हो जाते हैं। उनसे प्रेम करने के लिए हमें प्रेरित करने की बजाय, कृतघ्नता के कारण हम दूसरों को तुच्छ मानने लगते हैं।

स्पष्टतः, मसीहियों के रूप में परमेश्वर के प्रति हमारी कृतज्ञता से हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने और उन लोगों की सहायता करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए जिनसे वह प्रेम करता है। हम कभी भी मसीह के उपहार के बदले में परमेश्वर को कुछ नहीं चुका सकते हैं, इसलिए हमारे द्वारा किए जाने वाले अच्छे कार्य परमेश्वर को प्रतिदान या प्रतिभुगतान करने का तरीका नहीं हैं। वे केवल उन लोगों के प्रेम से भरे प्रत्युत्तर हैं जो परमेश्वर के कार्य की सराहना करते हैं। जो वास्तव में परमेश्वर के इस कार्य के लिए कृतज्ञ हैं, वे कभी झूठे देवताओं के सामने दण्डवत् करने, या उसके नाम को व्यर्थ में लेने, या परमेश्वर को अप्रसन्न करने वाला कोई कार्य करके उस कृतज्ञता को अभिव्यक्त नहीं करेंगे। हमने इतना महान उपहार पाया है जो अकल्पनीय है। तो हम हमारे वाचा के प्रभु के सामने स्वयं को पूरे दिल से समर्पित क्यों न करें?

यह देखने के बाद कि किस प्रकार कृतज्ञता के द्वारा हमें अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित होना चाहिए, अब हम परमेश्वर के भय को संबोधित कर सकते हैं जो परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम का भाग है और जो हमें अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करता है।

भय

आधुनिक कलीसिया में, मसीही अक्सर परमेश्वर के भय के बारे में बात नहीं करते हैं। और संभवतः इसका कारण यह है कि इस विचार को बहुत गलत समझा गया है। जब आधुनिक मसीही भय के बारे में सोचते हैं तो उसे सामान्यतः आतंक और डर से जोड़ते हैं। हम उन वस्तुओं से डरते हैं जो हमें हानि पहुँचा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सकती हैं, जो हमारी बुराई के लिए हैं। और कोई सन्देह नहीं कि बाइबल "भय" शब्द का प्रयोग अक्सर इस प्रकार करती है। परन्तु इस प्रकार के परमेश्वर के भय का एक विश्वासी के जीवन में कोई भाग नहीं है। जैसे यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 4:17-18 में लिखा हैः

> इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी है। प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। **(1 यूहन्ना 4:17-18)**

प्रेम मसीहियों में सिद्ध होता है और यह सिद्ध प्रेम भय को दूर करता है क्योंकि परमेश्वर हमें कभी हानि नहीं पहुँचाएगा। इसलिए, जब पवित्रशास्त्र परमेश्वर के भय के बारे में सकारात्मक रूप से बात करता है तो वह इस प्रकार के भय के बारे में बात नहीं करता है। जिस प्रकार का भय हमारे मन में है उसका वर्णन मूसा द्वारा व्यवस्थाविवरण 10:12-13 में किया गया है। देखें मूसा ने वहाँ क्या लिखा है।

> और अब, हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से इसके सिवाय और क्या चाहता है कि तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय माने और उसके सारे मार्गों पर चले, उससे प्रेम रखे, और अपने पूरे मन और अपने सारे प्राण से उसकी सेवा करे, और यहोवा की जो-जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनको ग्रहण करे, जिससे तेरा भला हो? **(व्यवस्थाविवरण 10:12-13)**

मूसा द्वारा यहाँ बताए गए कर्तव्यों में सूक्ष्म अन्तर हैं, परन्तु मूलतः वे सब एक ही हैं। भय मानना, चलना, प्रेम करना, सेवा करना, मानना-ये सब पूरे दिल, वफादारी, एवं सक्रियता से परमेश्वर एवं उसकी आज्ञाओं को मानने को बताते हैं।

सरलता के लिए, हम परमेश्वर के भय को "परमेश्वर के लिए भक्ति और आदर" के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जो "परमेश्वर के लिए प्रशंसा, प्रेम और आराधना को उत्पन्न करता है।" कुछ हद तक, इस प्रकार का भय मसीह में प्रत्येक सच्चे विश्वासी की विशेषता है। उदाहरण के लिए, यशायाह 33:5-6 में हम इस उपदेश को पढ़ते हैं:

> यहोवा... तेरे दिनों का निश्चित आधार होगा, उद्धार, बुद्धि एवं ज्ञान की बहुतायत का आधार होगा; यहोवा का भय उसका धन होगा। **(यशायाह 33:5-6)**

ध्यान दें कि आतंक की अभिव्यक्ति से दूर, भक्तिमय भय हमारे निश्चित आधार और उद्धार के रूप में परमेश्वर पर हमारे भरोसे से जुड़ा है।

यशायाह 11:2-3 में, हम पाते हैं कि यह भय मसीह की भी विशेषता है। भविष्यद्वक्ता के वचनों को देखें:

> और यहोवा की आत्मा-बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी। और उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा। **(यशायाह 11:2-3)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भक्तिमय भय सिकुड़ने या परमेश्वर से डरने का प्रत्युत्तर नहीं है। इसके विपरीत, यह एक हर्ष है। इसके अतिरिक्त, जैसे हम प्रेरितों के काम 9:31 में पढ़ते हैं, यही भय आरम्भिक कलीसिया की विशेषता थी। इस अभिलेख को देखें:

> . . . कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई। (प्रेरितों के काम 9:31)

एक बार फिर, भय शान्ति, बल और प्रोत्साहन जैसी भावनाओं से जुड़ा है, न कि आतंक या खतरे से।

परमेश्वर का भक्तिमय भय निरन्तर उसकी उपस्थिति में रहने के अर्थ में है। यह इस बात को समझना है कि परमेश्वर कौन और क्या है, और वह हम से क्या माँग करता है। और इस प्रकार, यह प्रेम का एक आयाम और अच्छे कार्यों को करने की प्रेरणा दोनों है। यह प्रेम का एक आयाम है क्योंकि यह परमेश्वर की शान और भलाई के प्रति पुष्टि एवं सराहना करने वाला प्रत्युत्तर है; यह उसके चरित्र के प्रति अत्यधिक अनुराग एवं प्रशंसा है। और यह, जिस व्यक्ति से हम प्रेम करते हैं उसका आदर और महिमा करने की हमारी इच्छा के द्वारा हमें अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित करता है।

हमारे अन्दर इस दृष्टिकोण का अभाव होने पर मसीही नैतिक शिक्षा के बारे में उदासीन और आलसी बनना आसान हो जाता है। यह सोचना आसान है कि परमेश्वर बहुत दूर है और हमें हमारे जीवनों में उसके द्वारा दिए उत्तरदायित्वों के बारे में ज्यादा चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर के राज्य की बाट जोहने की बजाय, हम केवल यहाँ के संसार पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। और इसके फलस्वरूप, हम परमेश्वर की प्रकट इच्छा के अनुसार अपने जीवनों को नियमित करने का कोई दबाव महसूस नहीं करते हैं।

परन्तु जब परमेश्वर के प्रति हमारा उचित भक्तिमय भय होता है तो उससे हमें बहुत से तरीकों से परमेश्वर को प्रसन्न करने की प्रेरणा मिलती है। पवित्रशास्त्र बहुत से स्थानों पर इस प्रेरणा के परिणामों का वर्णन करता है। परन्तु हम उनकी सर्वाधिक सघनता को पुराने नियम के बौद्धिक साहित्य में पाते हैं। उदाहरण के लिए, नीतिवचन की पुस्तक हमें सिखाती है कि यहोवा का भय मानना 1:7 में बुद्धि का मूल है, 9:10 में बुद्धि का आरम्भ है, और 14:27 में जीवन का सोता है। 10:27 के अनुसार यह आयु को बढ़ाता है। 16:6 में यह बुराई करने से बचाता है। और 22:4 में यह धन, महिमा और जीवन देता है। ये सारे और अन्य बहुत से अच्छे परिणाम परमेश्वर के भय से प्रवाहित होते हैं। देखें सभोपदेशक 12:13 सच्ची बुद्धि और नैतिकता को संक्षेप में किस प्रकार बताता हैः

> परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। (सभोपदेशक 12:13)

परमेश्वर का भय हमें इस प्रकार से सोचने, बोलने और कार्य करने के लिए प्रेरित करता है और करना चाहिए जिससे हमारा राजा और परमेश्वर प्रसन्न होता है। इससे हमें उसकी आज्ञाओं को मानने और उन प्राणियों की भलाई करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए जिनसे वह प्रेम करता है।

अतः, हम देखते हैं कि प्रेम कई प्रकार से अच्छे कार्यों के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है। निष्ठा में, यह हमें परमेश्वर और हमारे पड़ोसियों के प्रति हमारे कर्तव्य को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। कार्य में, यह हमें कुछ ऐसा करने की प्रेरणा देता है जिससे परमेश्वर की महिमा हो और हमारे पड़ोसियों को लाभ हो। और अनुराग में, यह हमें प्रभु की सेवा और हमारे पड़ोसियों की देखभाल के द्वारा हमारे प्रिय प्रभु को प्रसन्न करने की प्रेरणा देता है।

उपसंहार

अच्छे इरादों के इस अध्याय में, अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण पर हमारी चर्चा प्रेरणा के विचार पर केन्द्रित थी। हमने बाइबल पर आधारित निर्णयों को लेने की प्रक्रिया में प्रेरणाओं द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को देखते हुए, प्रेरणाओं के महत्व को देखने से आरम्भ किया था। बाद में, हमने दो बहुत ही महत्वपूर्ण प्रेरणाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जो हर एक अच्छे निर्णयों का भाग होती हैं: विश्वास की प्रेरणा, हमारे आरम्भिक उद्धार और सतत् मसीही जीवन दोनों में; और प्रेम की प्रेरणा, जिसमें निष्ठा, कार्य और अनुराग शामिल हैं।

मसीहियों को प्रतिदिन अत्यधिक नैतिक निर्णयों का सामना करना पड़ता है। बहुत से मामलों में, हमारे अपने व्यक्तित्वों की जाँच तो दूर यह समझना भी कठिन हो जाता है कि हमारे कर्तव्य क्या हैं और तथ्य क्या हैं। फिर भी, यदि हमारे निर्णयों को वास्तव में बाइबल पर आधारित होना है, तो हमें अपने इरादों को जाँचने का प्रयास करना होगा। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे द्वारा किया जाने वाला प्रत्येक कार्य परमेश्वर में हमारे विश्वास और परमेश्वर एवं पड़ोसी के प्रति हमारे प्रेम से प्रेरित है। जब हम अपने इरादों को स्पष्टता से सामने रखते हैं तो हम ऐसे निर्णयों को लेने के लिए बेहतर स्थिति में होंगे जिनसे हमारे प्रभु को आदर और महिमा मिलते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।